सप्रू हाउस पेपर

पश्चिमी हिंद महासागर की विकसित होती भू-राजनीति: भारत से एक प्रवेशिका

संकल्प गुर्जर और अंकिता दत्ता

सारांश

सप्रू हाउस पेपर का, "पश्चिमी हिन्द महासागर की विकसित होती भू-राजनीति: भारत से एक प्रवेशिका" शीर्षक का यह पत्र पश्चिमी हिंद महासागर (डब्ल्यूआईओ) में विकसित होती भू-राजनीति पर केंद्रित है। इसका मानना है कि इस क्षेत्र में प्रमुख शक्तियों की सैन्य उपस्थिति की भूमिका और महत्व को देखते हुए, डब्ल्यूआईओ 21वीं सदी की अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का एक प्रमुख आलम्ब बन कर उभरा है। इस पत्र के माध्यम से दो व्यापक विषय निकलते हैं: प्रमुख शक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा तथा डब्ल्यूआईओ की अवस्थिति का चिरस्थायी रणनीतिक महत्व। इन दोनों विषयों के संदर्भ में, यह पत्र सैन्य उपस्थिति पर विचार करता है, जिनमें प्रमुख शक्तियों के ठिकाने, डब्ल्यूआईओ के सामने आ रहीं गैर-पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियां तथा प्रमुख क्षेत्रीय संगठनों की भूमिका भी शामिल हैं। यह पत्र डब्ल्यूआईओ की परत-दर-परत खुलती भू-राजनीति को भारतीय दृष्टिकोण से देखता है और भारत की विदेश नीति एवं राष्ट्रीय सुरक्षा में क्षेत्रीय भू-राजनीति के निहितार्थों को सामने लाने में रुचि रखता है। पत्र भारत को डब्ल्यूआईओ में एक प्रमुख हितधारक मानता है और इसलिए, डब्ल्यूआईओ के भूगोल को फिर से परिभाषित करता है।

विषय-सूची

I. परिचय .... **Error! Bookmark not defined.**

II. तर्क .... **Error! Bookmark not defined.**

III. पश्चिमी हिन्द महासागर का मानचित्र .... **Error! Bookmark not defined.**

IV. पश्चिमी हिन्द महासागर की प्रमुख शक्तियां: एक अवलोकन **Error! Bookmark not defined.**

V. संयुक्त राज्य अमेरिका .... **Error! Bookmark not defined.**

VI. जापान .... **Error! Bookmark not defined.**

VII. चीन .... **Error! Bookmark not defined.**

VIII. रूस .... **Error! Bookmark not defined.**

IX. भारत .... **Error! Bookmark not defined.**

X. यूरोपीय हितधारक .... **Error! Bookmark not defined.**

1. यूरोपीय संघ .... **Error! Bookmark not defined.**

2. फ्रांस .... **Error! Bookmark not defined.**

3. यूनाइटेड किंगडम .... **Error! Bookmark not defined.**

XI. पश्चिमी एशियाई शक्तियां .... **Error! Bookmark not defined.**

XII. डब्ल्यूआईओ में गैर पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियां .... **Error! Bookmark not defined.**

1. आतंकवाद .... **Error! Bookmark not defined.**

2. समुद्री डकैती .... **Error! Bookmark not defined.**

3. ड्रग्स एवं हथियारों की तस्करी .... **Error! Bookmark not defined.**

4. जलवायु परिवर्तन .... **Error! Bookmark not defined.**

5. अवैध, बिना लाइसेंस के और अनियमित (आईयूयू) तौर पर मछली पकड़ना ....**Error! Bookmark not defined.**

XIII. डब्ल्यूआईओ में क्षेत्रीय संगठन .... **Error! Bookmark not defined.**

1. इंडियन ओसियन रिम एसोसिएशन (आईओआरए) .... **Error! Bookmark not defined.**
2. इंडियन ओसियन नेवल सिम्पोजियम (आईओएनएस) .... **Error! Bookmark not defined.**
3. इंडियन ओसियन कमीशन (आईओसी).. **Error! Bookmark not defined.**

XIV. उपसंहार .... **Error! Bookmark not defined.**

XV. अभिस्वीकृति .... **Error! Bookmark not defined.**

XVI. और पढ़ें .... **Error! Bookmark not defined.**

XVII. संदर्भ .... **Error! Bookmark not defined.**

I. परिचय

चूँकि 21वीं सदी की भू-राजनीति में हिंद महासागर क्षेत्र (आईओआर) केन्द्रीय भूमिका में है, ऐसे में पश्चिमी हिंद महासागर (डब्ल्यूआईओ) एक प्रमुख राजनीतिक और रणनीतिक थिएटर के रूप में उभरा है।[1] डब्ल्यूआईओ को एक ऐसे क्षेत्र के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो स्वेज नहर, दक्षिण अफ्रीका और ओमान के बीच स्थित है, जिसमें उनके तटीय हिस्से और इस विस्तृत स्थान पर स्थित द्वीप राज्य भी शामिल हैं। फारस की खाड़ी और उत्तरी हिंद महासागर पर लगता अरब सागर भी अपने किनारों के साथ डब्ल्यूआईओ की समग्र भू-रणनीतिक गणना का हिस्सा है।[i] बाब अल-मन्देब जलसन्धि और स्वेज़ नहर के रास्ते लाल सागर, डब्ल्यूआईओ के लिए एक महत्वपूर्ण प्रवेश बिंदु है। ज़मीन से घिरे राज्य (दक्षिण सूडान की तरह) जो अपने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और समुद्री कनेक्टिविटी के लिए डब्ल्यूआईओ के तटीय राज्यों पर निर्भर करते हैं, उन्हें 'व्यापक डब्ल्यूआईओ' क्षेत्र का हिस्सा भी माना जा सकता है। इस प्रकार, इस क्षेत्र में बीस से अधिक राज्य शामिल हैं[ii],, जिनमें से कई राजनीतिक रूप से अस्थिर हैं; यह अदन की

---

[i] It needs to be noted that, from India’s strategic considerations, the Persian Gulf is an extension of the Western Indian Ocean security complex. Energy dependence and the presence of a large expatriate community are key drivers for India’s engagement and interest in the Persian Gulf. However, this paper does not touch upon the geopolitics within the Persian Gulf including the Saudi-Iranian rivalry, tensions between US and Iran, etc. A separate study is required to map and analyze India’s interests in and association with the Gulf.

[ii] **List of countries that are part of the WIO (littoral and island states):** Egypt, Sudan, Eritrea, Israel, Saudi Arabia, Yemen, Djibouti, Somalia, Kenya, Tanzania, Mozambique, South Africa, Madagascar, Comoros,

खाड़ी जैसे महत्वपूर्ण जलमार्गों का घर है; इथियोपिया जैसी तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं का गौरव; और सबसे महत्वपूर्ण बात कि अब यह प्रमुख शक्तियों के तेजी से विस्तार पाते सैन्य ठिकानों की मेजबानी करता है। डब्ल्यूआईओ विश्व अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह बाब अल-मन्देब और होर्मुज जलडमरूमध्य के ज़रिये ऊर्जा संसाधनों की शिपिंग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और एशिया की बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं को यूरोप के साथ जोड़ता है।

भारत के लिए, ऐतिहासिक कारणों से तो डब्ल्यूआईओ की खास विशेषता है ही, साथ ही इसलिए भी है कि इस समुद्री मार्ग के ज़रिये होने वाला बाहरी व्यापार इसके जीडीपी के एक बड़े हिस्से का निर्माण करता है। इस क्षेत्र में भारत के समुद्री पड़ोसी और इसके विस्तारित पड़ोस शामिल हैं। डब्ल्यूआईओ इंडो-पैसिफिक क्षेत्र के एकीकृत भू-रणनीतिक क्षेत्र का पश्चिमी किनारा भी बनाता है, जो पूर्वी अफ्रीकी समुद्री तट से लेकर पश्चिमी प्रशांत तक फैला हुआ है, और क्षेत्र में बढ़ते सुरक्षा खतरों, जैसे कि समुद्री डकैती, आतंकवाद और प्रमुख शक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा के कारण, आज सबसे महत्वपूर्ण भू-राजनीतिक हॉटस्पॉट के रूप में जाना जाता है।

II. तर्क

डब्ल्यूआईओ संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएस), फ्रांस और चीन जैसी शक्तियों के सैन्य ठिकानों का घर है। रूस के द्वारा हाल ही में यह घोषणा किये जाने के बाद, कि यह सूडान में अपना एक ठिकाना स्थापित कर रहा है, यह स्पष्ट हो गया है क्षेत्र की भू-राजनीति गरमा रही है। पश्चिम एशियाई शक्तियों के बीच प्रतिद्वंद्विता भी डब्ल्यूआईओ में पुरानी बात है। परिणामस्वरूप, इस पूरे क्षेत्र को प्रतिस्पर्धी शक्तियों के बीच एक जटिल और बहुस्तरीय प्रतिद्वंद्विता झेलनी पड़ रही है, जहाँ क्षेत्रीय मामलों को वैश्विक स्तर पर शक्ति की राजनीति के साथ जोड़ा जा रहा है। इस क्षेत्र में प्रमुख शक्तियों की सैन्य उपस्थिति की बढ़ती भूमिका और महत्व को देखते हुए, यह पत्र अपना तर्क रखता है कि डब्ल्यूआईओ 21वीं सदी की अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का एक प्रमुख आलम्ब बन कर उभरा है। यह पत्र क्षेत्र के बढ़ते महत्व को समझाने का प्रयास है और यह क्षेत्र

Seychelles, Mauritius, Oman, Iran, Pakistan, Maldives and India (West Coast). **Land-locked states:** South Sudan, Ethiopia, Uganda, Rwanda, Burundi, Zimbabwe, Botswana, Malawi, Eswatini, Lesotho, Eastern DRC and Zambia.

के विभिन्न खिलाडियों और वहां से जुड़ी उनकी गतिविधियों पर नज़र डालता है। यह पत्र निरंतर सामने आ रही इस क्षेत्र की बदलती भू-राजनीति पर ध्यान आकर्षित करने की एक कोशिश है।

इस पत्र से दो व्यापक विषय निकलते हैं: प्रमुख शक्तियों के बीच प्रतिद्वंद्विता और डब्ल्यूआईओ की अवस्थिति का स्थायी रणनीतिक महत्व। इन दोनों विषयों के संदर्भ में, यह पत्र प्रमुख शक्तियों के ठिकानों के साथ-साथ उनकी सैन्य उपस्थिति, डब्ल्यूआईओ के सामने आने वाली गैर-पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियों तथा प्रमुख क्षेत्रीय संगठनों पर विचार करता है। यह पत्र डब्ल्यूआईओ की परत-दर-परत खुलती भू-राजनीति को भारतीय दृष्टिकोण से देखता है और भारत की विदेश नीति एवं राष्ट्रीय सुरक्षा में क्षेत्रीय भू-राजनीति के निहितार्थों को सामने लाने में रुचि रखता है। पत्र भारत को डब्ल्यूआईओ में एक प्रमुख हितधारक मानता है और इसलिए, डब्ल्यूआईओ के भूगोल को फिर से परिभाषित करता है।

शक्ति की होड़

प्रमुख शक्तियों के बीच प्रतिद्वंद्विता डब्ल्यूआईओ की क्षेत्रीय भू-राजनीति की एक अनिवार्य विशेषता के रूप में उभरी है। चीन, फ्रांस और अमेरिका सहित प्रमुख शक्तियां इस क्षेत्र में अपनी बहुआयामी उपस्थिति और सैन्य पहुंच को बढ़ाने तथा उन्हें समेकित करने में सक्रिय रूप से जुटी हुई हैं। उन्होंने डब्ल्यूआईओ में अपने स्थायी सैन्य पदचिह्न सुनिश्चित करने के प्रयास किए हैं और अपनी सैन्य सुविधाओं के दायरे का कई गुना विस्तार किया है। समुद्री डकैती रोधी, आतंकवाद रोधी और समुद्री सुरक्षा अभियानों के लिए नियमित सैन्य उपस्थिति, रक्षा कूटनीति जिसमें मानवीय सहायता और आपदा राहत (HADR) के प्रयास शामिल हैं तथा इस क्षेत्र में नौसैनिक अभ्यास- इन देशों की बढ़ती शक्ति और रुचि को दर्शाते हैं।

अपनी गतिविधियों और कार्यों का विस्तार करके, ये प्रमुख शक्तियां अपने प्रतिद्वंद्वी पर सापेक्ष लाभ प्राप्त करना और अपने विरोधी के प्रभाव के घेरे को सीमित करना चाहती हैं। इसके लिए, छोटे किन्तु रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण मौजूदगी रखने वाले जिबूती और सेशेल्स जैसे राज्यों को भी मनाया जा रहा है, उन्हें फुसलाया जा रहा है। सूडान और इरीट्रिया जैसे राज्यों ने बड़ी शक्तियों से मिले इस तवज्जो का लाभ अपने फायदे के लिए उठाया है, जबकि यमन जैसे संघर्षग्रस्त राज्य को इस उभरती हुई भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता के बड़े प्रतिकूल प्रभावों का

सामना करना पड़ा है। प्रमुख खिलाड़ियों के बीच शक्ति को लेकर प्रतिस्पर्धा 1970 से ही डब्ल्यूआईओ की एक निरंतर विशेषता रही है जो 21वीं सदी के पहले दो दशकों में और अधिक तीव्र हुई है। ऐसे में इस बात की पूरी संभावना है कि अमेरिका और चीन के बीच इंडो-पैसिफिक प्रतिद्वंद्विता तेज होने के साथ ही, डब्ल्यूआईओ की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाएगी।

डब्ल्यूआईओ की अवस्थिति का स्थायी रणनीतिक महत्व

डब्ल्यूआईओ रणनीतिक रूप से एशिया, अफ्रीका और यूरोप के चौराहे पर स्थित है, और इसलिए इस क्षेत्र की प्रमुख शक्तियों को आकर्षित करता है। यह दुनिया की ऊर्जा हृदयस्थली यानी पश्चिम एशिया के करीब है और इस क्षेत्र से गुजरने वाली समुद्री गलियां वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा के लिए बेहद महत्वपूर्ण हैं। बाब अल-मन्देब जलसन्धि, होर्मुज के जलडमरूमध्य, मोजाम्बिक चैनल और केप ऑफ गुड होप जैसे कई समुद्री चोकपॉइंट डब्ल्यूआईओ के भीतर स्थित हैं। हिंद महासागर के बंद भूगोल के लिए, ये चोकप्वाइंट महत्वपूर्ण प्रवेश और निकास बिंदु भी हैं। इन चार के अलावा, एक और चोकपॉइंट यानी स्वेज नहर भी डब्ल्यूआईओ की भू-राजनीति के लिए महत्वपूर्ण है। ये पाँचों चोकपॉइंट अंतरराष्ट्रीय व्यापार और क्षेत्र से गुजरने वाली समुद्री गलियों की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं और इनका वैश्विक अर्थव्यवस्था पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

डब्ल्यूआईओ का स्थान संसाधनों की सुरक्षा के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण है। सोमालिया और मोजाम्बिक के बीच का क्षेत्र एक नए ऊर्जा हॉटस्पॉट के रूप में उभर रहा है और दक्षिण अफ्रीका, डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो (डीआरसी) तथा ज़िम्बाब्वे जैसे राज्य यूरेनियम, तांबा, प्लैटिनम और सोने जैसे रणनीतिक खनिजों से समृद्ध हैं। डब्ल्यूआईओ में सार्थक उपस्थिति इन संसाधनों एवं अन्य तक पहुंच सुनिश्चित करती है जिसके फलस्वरूप, बड़े देशों की इनमें दिलचस्पी बढ़ती है। ब्लू इकोनॉमी के विकास, समुद्रतल खनन और तटीय कल्याण जैसे उभरते क्षेत्र भविष्य में

डब्ल्यूआईओ के महत्व को और बढ़ा सकते हैं। अत: अपनी अवस्थिति के कारण डब्ल्यूआईओ का बढ़ता सामरिक महत्व अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की एक प्रमुख विशेषता है।

दृष्टिकोण

यद्यपि बड़े पैमाने पर डब्ल्यूआईओ क्षेत्र को इंडो-पैसिफिक के संदर्भ में देखा जाता है, लेकिन इस पत्र का उद्देश्य विशेष रूप से डब्ल्यूआईओ पर एक विहंगम दृष्टि डालना है। चूँकि यह इस गतिशील रणनीतिक थिएटर की परतें खोलता है, अत: इस पत्र को स्थूल वास्तविकता प्रस्तुत करने के लिए तैयार किया गया है। यह बड़ी शक्तियों और क्षेत्र में उनके प्रमुख रणनीतिक संबंधों को व्याख्यात्मक तरीके से शामिल करता है। इसका उद्देश्य उन गतिविधियों को शामिल करना है, जो डब्ल्यूआईओ की भू-राजनीति से सम्बद्ध हैं और उसे प्रभावित करती हैं।

यह पत्र गैर-पारंपरिक सुरक्षा खतरों का भी विश्लेषण करता है जो क्षेत्र की सुरक्षा गतिकी पर गहरा प्रभाव डालते हैं। मौजूदा गैर-पारंपरिक सुरक्षा खतरे कुछ हद तक, प्रमुख शक्तियों को इस क्षेत्र में लाने और उनकी निरंतर उपस्थिति को औचित्य प्रदान करने के लिए जिम्मेदार थे। डब्ल्यूआईओ की रणनीतिक महत्ता बढ़ने के साथ ही, हिंद महासागर से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। हालाँकि, कुछ हद तक कमतर आंके जाने के बाद भी, ये संगठन प्रमुख मुद्दों की पहचान के लिए जरूरी मंच के तौर पर काम करते हैं, तथा कई मुद्दों पर प्रभावी सहकारी रणनीतियों के निर्माण के लिए आवश्यक कदमों पर चर्चा करते हैं, जिनमें जलवायु परिवर्तन, आपदा प्रबंधन, समुद्री सुरक्षा जैसे मुद्दे शामिल हैं। यह पत्र आईओआरए, आईओएनएस, तथा आईओसी द्वारा क्षेत्रीय सुरक्षा और प्रशासन को लेकर निभाई जाने वाली भूमिका पर संक्षेप में विचार करता है।

III. पश्चिमी हिन्द महासागर का मानचित्र

श्रोत: गूगल मैप डाटा; 2021

मानचित्र केवल उदाहरण के लिए है। इसे पैमाना नहीं माना जाना चाहिए।

IV. पश्चिमी हिंद महासागर की प्रमुख शक्तियां: एक अवलोकन

1860 के दशक में स्वेज़ नहर के खुलने के साथ ही, डब्ल्यूआईओ में मौजूद बड़ी शक्तियों और औपनिवेशिक प्रतिद्वंद्वियों में स्पर्धा तेज़ हो गई। 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी के प्रारंभ में, ब्रिटेन, फ्रांस और इटली ने इस क्षेत्र के प्रदेशों और चोकपॉइंट पर नियंत्रण के लिए मुकाबला किया।[2] ब्रिटेन ने अदन, मिस्र, सूडान और सोमालिया के कुछ हिस्सों को प्राप्त करने में सफलता पा ली और फ्रांस को छोटे किन्तु रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण जिबूती के साथ-साथ दक्षिण-पश्चिम हिंद महासागर द्वीप समूह जैसे कि मैडागास्कर, कोमोरोस और रियूनियन द्वीप तक सीमित कर दिया। इटली इरीट्रिया और सोमालिया के कुछ हिस्सों पर नियंत्रण स्थापित करने में कामयाब रहा, जबकि इम्पीरियल जर्मनी, जो कि इस औपनिवेशिक प्रतियोगिता में देर से शामिल हुआ था, ने तंजानिया पर कब्ज़ा कर लिया। इनके अतिरिक्त, 16वीं शताब्दी के बाद से मोजाम्बिक और गोवा (भारत के पश्चिमी तट पर) पुर्तगाल के कब्जे में थे।

डब्ल्यूआईओ के चारों ओर महान शक्तियों के बीच राजनीति का ट्रेंड शीत युद्ध के वर्षों तक भी चलता रहा जब संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएस) और सोवियत संघ का आगमन बड़ी शक्तियों के तौर पर हुआ। विश्व के केन्द्रीय ऊर्जा क्षेत्र के रूप में पश्चिम एशियाई क्षेत्र के उद्भव ने महाशक्तियों की गणना में डब्ल्यूआईओ के सामरिक महत्व को और अधिक बढ़ा दिया। क्षेत्र में मजबूत मुकाम हासिल करने के लिए दोनों महाशक्तियों ने डब्ल्यूआईओ में गठबंधन बनाए और प्रतिनिधियों का निर्माण किया। 1967 में 'स्वेज़ के पूर्व' से ब्रिटिश नौसेना की वापसी के मद्देनजर 1970 के दशक में इन महाशक्तियों और उनके क्षेत्रीय प्रतिनिधियों के बीच स्पर्धा तेज़ हो गई थी। सोवियत संघ ने इथियोपिया, मोजाम्बिक, यमन और सोमालिया में दोस्ताना शासन कायम किया, जबकि अमेरिका ने रंगभेद के शिकार देशों, यथा दक्षिण अफ्रीका, केन्या,

सऊदी अरब और मिस्र में अपना समर्थन बढ़ाया।[3] शीत युद्ध के बाद की दुनिया में, रूस अब विदेशी सैन्य ठिकानों को बनाए रखने में सक्षम नहीं था, जबकि 1993 में सोमालिया में 'ब्लैक हॉक डाउन' के असफल होने के बाद, जिसमें 18 अमेरिकी सैनिक मारे गए थे, अमेरिका भी आंशिक रूप से पीछे हट गया था। हालांकि, इसने डिएगो गार्सिया में अपने ठिकाने के ज़रिये इस क्षेत्र में अपनी उपस्थिति को बनाए रखा। फ्रांस ने इस क्षेत्र में (जिबूती में ठिकाने के साथ) अपनी उपस्थिति बनाए रखी और बजट में कटौती, छंटनी तथा अपनी रक्षा नीति के पुनर्मूल्यांकन के बावजूद यहाँ अपनी पैठ मजबूत की।

अमेरिका ने 11 सितंबर, 2001 (9/11) के आतंकवादी हमलों के बाद 2002 में जिबूती में सैन्य अड्डे की स्थापना के साथ डब्ल्यूआईओ में सक्रिय वापसी का संकेत दिया। जिबूती का यह ठिकाना इस क्षेत्र में अमेरिकी सैन्य उपस्थिति का सबसे प्रमुख स्तंभ है। पिछले एक दशक में, जापान और चीन के साथ-साथ फ्रांस, जर्मनी, स्पेन और इटली ने भी जिबूती में अपने सैन्य ठिकाने स्थापित किए हैं। ये देश अब समुद्री डकैती और आतंकवाद से लड़ने के लिए क्षेत्र में नियमित रूप से सैन्य संपदा तैनात कर रहे हैं।[4] इस संदर्भ में, जिबूती में चीन की नियमित नौसैनिक उपस्थिति और एक प्रमुख सैन्य ठिकाने ने सबका ध्यान खींचा है। भारत भी समुद्री डकैती रोधी प्रयासों में हॉर्न ऑफ़ अफ्रीका के तट पर एक सक्रिय भागीदार है और इसने धीरे-धीरे इस क्षेत्र में अपनी राजनयिक और सैन्य उपस्थिति का विस्तार किया है। हाल ही में, रूस ने सूडान के साथ लाल सागर तट पर सैन्य अड्डा स्थापित करने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं और यह डब्ल्यूआईओ की उभरती हुई भू-राजनीति में एक और महत्वपूर्ण कारक है।[5] इसके अलावा, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), कतर, इजरायल और तुर्की जैसी प्रमुख पश्चिम एशियाई ताकतों ने भी डब्ल्यूआईओ के बड़े हिस्सों में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई है, विशेष रूप लाल सागर के आसपास।[6]

डब्ल्यूआईओ में विकसित हो रही भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा जटिल और बहुआयामी है। साथ ही साथ, इसका दायरा और प्रकृति क्षेत्रीय व वैश्विक दोनों है। यह राजनीति, कूटनीति और रणनीति जैसे विविध क्षेत्रों में फैली है और इसमें कई अभिनेता शामिल हैं। परिणामस्वरूप, डब्ल्यूआईओ में प्रमुख शक्तियों की उपस्थिति, उनका चित्रण और दृष्टिकोण तथा भारत के लिए इसके निहितार्थों पर विचार करना आवश्यक है।

V. संयुक्त राज्य

अमेरिका के लिए, दो सैन्य कमांड डब्ल्यूआईओ को कवर करते हैं: अफ्रिकोम अफ्रीका में हिंद महासागर के तटीय क्षेत्रों तथा लाल सागर के कुछ तटीय हिस्सों को कवर करता है जबकि सेंटकॉम लाल सागर के उत्तरी और पूर्वी तट (मिस्र सहित) और साथ ही अरब प्रायद्वीप के दक्षिणी राज्यों को भी कवर करता है, जैसे कि यमन और ओमान।[7] ईरान और पाकिस्तान भी सेंटकॉम द्वारा कवर किए गए हैं। ये दोनों कमांड और इसके परिणामस्वरूप डब्ल्यूआईओ में पर्याप्त अमेरिकी सैन्य उपस्थिति (वायु, नौसैनिक और उभयचर जहाज एवं लड़ाकू विमान जैसी संपत्तियां) अमेरिकी रणनीतिक और सैन्य उपस्थिति तथा शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं। संक्षेप में कहें तो, डब्ल्यूआईओ में अफ्रीका, पश्चिम एशिया और हिंद महासागर के प्रति अमेरिकी रणनीति और जिबूती में इसका सैन्य अड्डा इस संबंध के केंद्र में है। अमेरिका ने इस अड्डे को 2002 में यमन और सोमालिया में आतंकवाद-रोधी अभियानों का संचालन करने तथा क्षेत्रीय घटनाओं का अधिक प्रभावी ढंग से निगरानी करने के लिए स्थापित किया था।[8] इस क्षेत्र से गुजरने वाले संचार के समुद्री गलियारों (एसएलओसी) की सुरक्षा में अब भी अमेरिका की दिलचस्पी है। उल्लेखनीय है कि 9/11 से पहले के दो बड़े आतंकी हमले डब्ल्यूआईओ में हुए थे:

1998 में केन्या और तंजानिया में अमेरिकी दूतावासों पर बमबारी और 2000 में यमन जलक्षेत्र के पास नौसैनिक युद्धपोत यूएसएस कोल पर हमला।

जिबूती का सैन्य अड्डा 2003 में इराक पर अमेरिका के आक्रमण के समय बहुत काम आया था, साथ ही यह क्षेत्र से खुफिया जानकारी इकट्ठा करने के लिए निगरानी उड़ानें शुरू करने के लिए भी उपयोगी था। अब तक, अमेरिका जिबूती में लगभग 4000 सैनिकों को तैनात कर चुका है।[9] 2012 में लीबिया में अमेरिकी दूतावास पर हमले के बाद से, अमेरिका ने इस क्षेत्र से राजनयिक कर्मचारियों को निकालने के लिए जिबूती में 150 विशेष बलों को बनाए रखा है।[10] इन वर्षों में, यूएस के आतंकवाद-रोधी अभियानों में कई गुना वृद्धि हुई है और अमेरिकी सेना ने गहरे प्रभाव के लिए ड्रोन तैनात किए हैं।[11] अमेरिका जिबूती में एक फ्रांस द्वारा नियंत्रित हवाई अड्डे से ड्रोन का संचालन करता है। वाशिंगटन पोस्ट ने लिखा था, "कैम्प लेमनियर अफ्रीका में आधा दर्जन अमेरिकी ड्रोन और निगरानी ठिकानों के विस्तार वाले तारामंडल का केंद्र बिंदु है, जिसे पूरे महाद्वीप में, माली से लेकर लीबिया और मध्य अफ्रीकी गणराज्य तक आतंकवादी समूहों की एक नई पीढ़ी का मुकाबला करने के लिए बनाया गया है। अमेरिकी सेना इथियोपिया और सेशेल्स के छोटे नागरिक हवाई अड्डों से भी ड्रोन उड़ाती है, लेकिन वे ऑपरेशन उनके सामने फीके हैं, जिनका पता जिबूती में चल रहा है। वास्तव में, 2011 में अल-कायदा के सदस्य अनवर-अल-अवलाकी को मारने के लिए अमेरिकी ड्रोन जिबूती और अरब प्रायद्वीप में एक गुप्त अड्डे से उड़े और यमन के ऊपर मिल गए।[12]

डब्ल्यूआईओ में आतंकवाद-रोधी प्रयासों के अलावा, एंटी-पायरेसी और समुद्री सुरक्षा का संचालन करने के लिए, अमेरिका तीन नौसैनिक कार्य बलों का भी समन्वय करता है जिसमें कई अमेरिकी सहयोगी और अन्य साझेदार देश शामिल हैं।[13] 9/11 के आतंकवादी हमलों के बाद गठित संयुक्त टास्क फोर्स (CTF) -150 का कार्य फारस/अरब की खाड़ी के बाहर समुद्री सुरक्षा

का संचालन करना है। यह लाल सागर, अदन की खाड़ी, ओमान की खाड़ी और उत्तर-पश्चिम हिंद महासागर को कवर करता है।[14] सीटीएफ-152 सीटीएफ-150 के प्रयासों को पूरा करता है और खाड़ी के भीतर ऑपरेशन चलाता है। 2007-08 में सोमालिया के तट पर समुद्री डकैती के बढ़ते खतरे को देखते हुए सीटीएफ-151 को समुद्री डकैती-रोधी कार्यों को अंजाम देने के लिए शुरू किया गया था।[15] डब्ल्यूआईओ की समग्र सुरक्षा के लिए सीटीएफ-151 भारत और चीन जैसी अन्य प्रमुख शक्तियों की नौसेनाओं के साथ भी समन्वय रखता है।

अमेरिका की सैन्य उपस्थिति केन्या, इथियोपिया, सोमालिया और सेशेल्स में भी है।[16] हाल ही में, अमेरिका ने सोमालिया से सैनिकों की वापसी और केन्या में उनके पुनर्नियोजन की घोषणा की।[17] ये ठिकाने जिबूती जितने बड़े नहीं हैं, लेकिन फिर भी मौजूदा और संभावित खतरों को बेअसर करने के लिए इस क्षेत्र में अमेरिकी युद्धशक्ति को स्थापित करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। इनमें से ज्यादातर सैन्य स्थलों को 'सहकारी सुरक्षा स्थलों' के रूप में बताया गया है और विदेशी सैन्य ठिकानों से जुड़े नकारात्मक राजनीतिक नतीजों से बचने के लिए इन्हें गुप्त रखा गया है।[18] अमेरिका के हित में डब्ल्यूआईओ को सुरक्षित करने के लिए ये स्थल पश्चिम एशिया में अमेरिकी सैन्य ठिकानों (जैसे बहरीन, कुवैत, कतर, यूएई और ओमान में), जिबूती के साथ-साथ डिएगो गार्सिया बेस (मध्य हिंद महासागर में) से जुड़े हुए हैं।[19] डब्ल्यूआईओ में अमेरिका की यह सैन्य मौजूदगी इस क्षेत्र में तीव्र होती भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के संदर्भ में अधिक महत्वपूर्ण है।

भारत के लिए, डब्ल्यूआईओ में अमेरिका की उपस्थिति दुविधापूर्ण स्थिति पैदा करती है। यह डब्ल्यूआईओ के समुद्री मार्गों को सुरक्षित करने के लिए कार्य करता है और आतंकवाद, पायरेसी तथा ड्रग तस्करी जैसे खतरों का मुकाबला करने के लिए उपयोगी है। इस क्षेत्र में चीन की बढ़ती सैन्य उपस्थिति के मद्देनजर, डब्ल्यूआईओ में भारत-अमेरिका समुद्री भागीदारी सामरिक महत्व

रखती है। हालाँकि, अमेरिका का ईरान के प्रति शत्रुतापूर्ण रुख रखना और बदले में ईरान का भी चीन और रूस के साथ नौसैनिक अभ्यास करना और अमेरिका का अफ-पाक क्षेत्र में दिलचस्पी लेना, डब्ल्यूआईओ के साथ भारत के संबंधों को जटिल बना देता है। परिणामस्वरूप, डब्ल्यूआईओ में भारत और अमेरिका के बीच हितों का एक होना आसान काम नहीं है, जैसा कि पूर्वी हिंद महासागर में हुआ है, और इसके लिए दोनों पक्षों को निरंतर प्रयास करने की आवश्यकता होगी।

VI. जापान

जापान, जो मुख्य रूप से एक पैसिफिक शक्ति है, समुद्री डकैती रोधी प्रयासों के तहत 2009 से ही डब्ल्यूआईओ में सोमालिया के तट पर विमान और नौसेना के जहाज भेज रहा है क्योंकि अपने ऊर्जा और आर्थिक हितों के लिए उसे क्षेत्र में अपनी गतिविधियों को बढ़ाना जरूरी था।[20] समुद्री डकैती रोधी अभियानों ने जापान को अच्छे तरीके से क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करने और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रयासों में योगदान करने का मौका दिया। इसलिए, फ्रांस और अमेरिका के बाद, जापान 2011 में जिबूती में सैन्य अड्डा खोलने वाला तीसरा देश बन गया। यह द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जापानी आत्मरक्षा बलों का पहला विदेशी सैन्य अड्डा भी है।[21] जिबूती में जापानी सैन्य अड्डा अमेरिकी बेस के पास स्थित है और यह जापान को कई गतिविधियों के संचालन में मदद करता है जिसमें दक्षिण सूडान में संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन का समर्थन भी शामिल है।

जापान इस क्षेत्र में अपने ऊर्जा, आर्थिक और भू-राजनीतिक हितों के कारण पश्चिम एशिया और अफ्रीका के साथ जुड़ने के प्रयासों को आगे बढ़ा रहा है। पश्चिम एशिया से जापान का तेल आयात 89% और गैस का आयात 18% है।[22] नतीजतन, जापान हिंद महासागर के शिपिंग लेन

पर बहुत अधिक निर्भर करता है और इस क्षेत्र में सुरक्षा एवं शक्ति के संतुलन को सुनिश्चित करने के लिए यह एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। इसके परिणामस्वरूप, यह चीन की बढ़ती उपस्थिति का मुकाबला करने सहित इस क्षेत्र में अपनी गतिविधियों को बढ़ा रहा है।[23] डब्ल्यूआईओ में इन पैसिफिक शक्तियों की बढ़ती रुचि इंडो-पैसिफिक क्षेत्र के एक रणनीतिक वास्तविकता के रूप में उद्भव को इंगित करती है और एक जटिल भू-राजनीतिक गतिकी के लिए मार्ग प्रशस्त करती है। इस संदर्भ में, भारत, जापान और दक्षिण कोरिया जैसे खिलाड़ियों का महत्व लगातार बढ़ रहा है।

डब्ल्यूआईओ के साथ संबंधों के तहत अफ्रीका के साथ विकासात्मक और आर्थिक जुड़ाव [जापान इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी (JICA) और अफ्रीका के विकास पर टोक्यो इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस (TICAD) जैसी एजेंसियों और पहलों के माध्यम से] भी जापान के लिए एक महत्वपूर्ण हित के रूप में उभर रहा है।[24] हाल ही में, दिसंबर 2020 में, जापानी विदेश मंत्री तोशिमित्सु मोतेगी ने चार अफ्रीकी देशों का दौरा किया; जिनमें से तीन (दक्षिण अफ्रीका, मॉरीशस और मोजाम्बिक) डब्ल्यूआईओ में स्थित हैं।[25] इंडो-जापानी पहल एशिया-अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर (AAGC) को चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के विकल्प के रूप में पेश किया जा रहा है। डब्ल्यूआईओ एएजीसी का एक महत्वपूर्ण तत्व बन सकता है।[26] हालाँकि, यह ध्यान देने की जरूरत है कि अभी तक एएजीसी को कोई ठोस प्रगति नहीं मिली है। कथित तौर पर, भारत और जापान अधिग्रहण और क्रॉस सर्विसिंग समझौते (ACSA) के तहत भारतीय नौसेना को जिबूती में जापानी अड्डे तक पहुंचने की अनुमति के लिए बातचीत कर रहे हैं जबकि दूसरी ओर जापानी नौसेना भी भारत के अंडमान और निकोबार द्वीप समूह तक पहुंचने में सक्षम होगी।[27] भारत जिबूती तक पहुंचने के लिए उत्सुक रहा है और जापान इस प्रयास में एक इच्छुक भागीदार होगा। नतीजतन,

डब्ल्यूआईओ में जापानी रुचि आने वाले वर्षों में बढ़ने की संभावना है जो वृहत इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में भारत-जापान रणनीतिक साझेदारी की आवश्यकता पर बल देता है।

VII. चीन

इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में एक बड़ी आर्थिक और सैन्य शक्ति के रूप में चीन के उदय और हिंद महासागर में इसके विस्तार को रणनीतिक हलकों में चिंता के साथ देखा जा रहा है। चीन के लिए, तीन घटनाक्रमों ने डब्ल्यूआईओ में स्थायी तौर पर सैन्य उपस्थिति को प्रासंगिक बना दिया: 2008-09 में सोमालिया के तट पर समुद्री डकैती का बढ़ता खतरा, 2011 में गृहयुद्ध से ग्रस्त लीबिया से 35,000 चीनी नागरिकों को निकालने का अभियान और 2015 में यमन से (जिबूती होते हुए) चीनी नागरिकों की निकासी।[28] इसके अलावा, चीन केन्या, इथियोपिया, तंजानिया और सूडान जैसे डब्ल्यूआईओ देशों के साथ उत्तरोत्तर आर्थिक और बुनियादी ढांचा संबंधों का निर्माण कर रहा है। इन वर्षों में, चीन अफ्रीकी देशों का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बन गया है (चीन और अफ्रीका के बीच द्विपक्षीय व्यापार 2019 में 192 बिलियन डॉलर था) । अपनी आर्थिक वृद्धि को बनाए रखने के लिए यह पश्चिम एशिया और अफ्रीका के ऊर्जा संसाधनों पर निर्भर है, जिसे हिंद महासागर से परिवहन किया जाता है।[29] इसके अतिरिक्त, चीन डब्ल्यूआईओ क्षेत्र में बड़े पैमाने पर बंदरगाहों (केन्या में लामू और तंजानिया में बागामोयो) तथा रेलवे (केन्या और इथियोपिया-जिबूती में) का निर्माण करा रहा है, साथ ही साथ यह जिम्बाब्वे और दक्षिण अफ्रीका के साथ घनिष्ठ कूटनीतिक संबंधों का आनंद भी उठा रहा है।[30] इस प्रकार, डब्ल्यूआईओ, चीन के बीआरआई का एक प्रमुख घटक है। ये सभी कारक चीन की सैन्य और कूटनीतिक रणनीति में डब्ल्यूआईओ क्षेत्र की बढ़ती प्रासंगिकता की ओर इशारा करते हैं।

डब्ल्यूआईओ में चीन की सैन्य उपस्थिति 2008-09 से है जब पीपुल्स लिबरेशन आर्मी नेवी (पीएलएएन) ने समुद्री डकैती रोधी अभियानों के लिए, खुले रूप से अपने युद्धपोतों को तैनात करना शुरू कर दिया। तब से, चीन अपने नौसैनिक जहाजों को तैनात करता आ रहा है जिसमें एक परमाणु पनडुब्बी भी शामिल है।[31] चीनी नौसेना के जहाज न केवल डब्ल्यूआईओ में समुद्री डकैती को रोकने के लिए कार्य करते हैं बल्कि हिंद महासागर के ऑपरेटिंग वातावरण का अध्ययन करने, रक्षा कूटनीति का संचालन करने, पोर्ट कॉल करने और इसकी समग्र सैन्य उपस्थिति को नियमित करने में भी मदद करते हैं।[32]

2017 में जिबूती में एक सैन्य अड्डे के निर्माण के बाद डब्ल्यूआईओ में चीन के हित खुल कर सामने आ गए हैं। जिबूती में सैन्य अड्डा इसका पहला फॉरवर्ड ऑपरेटिंग बेस है, जो चीन को डब्ल्यूआईओ की निगरानी करने की अनुमति देता है, विशेष रूप से अमेरिका और उसके सहयोगियों की गतिविधियों की। साथ ही यह चीन के एंटी-पाइरेसी नौसेना अभियानों का समर्थन करता है और इस क्षेत्र में चीनी संपत्ति एवं नागरिकों की रक्षा करता है। कथित तौर पर, चीन जिबूती के दोरालेह बंदरगाह तक पहुंच चुका है, जो चिंता का कारण है। जिबूती में चीन का ठिकाना कई हजार सैनिकों को शरण दे सकता है और यह इस क्षेत्र में चीनी शक्ति के प्रदर्शन की ओर एक बड़ा कदम है।[33]

ग्वादर (पाकिस्तान) में चीन के संभावित सैन्य अड्डे को भी मिला दें तो डब्ल्यूआईओ में उसकी मौजूदगी और ईरान सहित क्षेत्र के अन्य देशों के साथ गहरे संबंध भारत के लिए रणनीतिक चुनौतियों की एक श्रृंखला प्रस्तुत करते हैं।[34] चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (CPEC) जैसी बीआरआई परियोजनाओं से क्षेत्र में इसकी उपस्थिति और बढ़ने की संभावना है। इसके अलावा, चीन ने डब्ल्यूआईओ में अपनी राजनयिक उपस्थिति का भी विस्तार किया है: इसने 2014 में सोमालिया में अपने दूतावास को फिर से खोला और मेडागास्कर व सेशेल्स के साथ लचीले संबंध

भी बनाए हैं।[35] 2019 में, चीन के पीएलएएन (PLAN) ने डब्ल्यूआईओ में ईरान, रूस और दक्षिण अफ्रीका के साथ नौसेनिक अभ्यास किया।[36] इन गतिविधियों से पता चलता है कि इस क्षेत्र में शक्ति संतुलन भारी दबाव में है। पीएलएएन की बढ़ती पहुंच इस क्षेत्रीय संतुलन में और भी खिंचाव पैदा करने जा रही है। इस संदर्भ में, भारत, जापान, फ्रांस, ब्रिटेन और अमेरिका जैसी शक्तियों के बीच पूरी क्षमताओं के साथ हुए रणनीतिक सहयोग के महत्व को ख़ारिज नहीं किया जा सकता है। यह रणनीतिक तस्वीर इस तथ्य से और अधिक जटिल हो जाती है कि रूस भी डब्ल्यूआईओ में लौट रहा है।

VIII. रूस

रूस द्वारा सूडान में लाल सागर तट पर एक सैन्य अड्डे की स्थापना की घोषणा के साथ ही,[37] इस बात पर ध्यान देने की जरूरत है कि, सोवियत रूस 1970 और 1980 के दशक में डब्ल्यूआईओ में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी हुआ करता था। सोवियत नौसेना की सोमालिया में बेरबेरा बंदरगाह तक पहुंच थी और, 1970 के दशक में, जब मार्क्सवादी शासन ने इथियोपिया में सत्ता संभाली थी, उस समय तक सोवियत संघ लाल सागर क्षेत्र में खुद को स्थापित कर चुका था।[38] हालांकि, सोवियत संघ के विघटन के बाद क्षेत्र में रूसी मौजूदगी कम हो गई। 2008-09 में, रूस ने हिंद महासागर की भू-राजनीति में खुद को फिर से स्थापित करने का अवसर देखा। जिसके बाद, डब्ल्यूआईओ में एंटी-पायरेसी प्रयासों में रूसी नौसेना भी एक सहायक बन गई।

समुद्री क्षेत्र को लेकर रूसी नौसेना की महत्वाकांक्षाओं और नीतिगत दृष्टिकोण का उल्लेख 2015 में जारी किए गए समुद्री सिद्धांत में किया गया था।[39] सिद्धांत में कहा गया था कि हिंद महासागर में, रूस की दिलचस्पी समुद्री गतिविधियों की सुरक्षा करने में है जिसमें “समुद्री डकैती

का मुकाबला करना" शामिल है और इस प्रकार यह अपनी "नौसेना की उपस्थिति सुनिश्चित करना चाहता है"।[40] यह आगे बताता है कि, "भारत के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों का विकास हिंद महासागर क्षेत्र में राष्ट्रीय समुद्री नीति का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य है"।[41] सैन्य अड्डे के साथ लाल सागर में रूस की वापसी एक बड़ा रणनीतिक विकास है। भूमध्यसागरीय तट पर सीरिया में रूसी ठिकाने के साथ, यह इसके हितों और परियोजना शक्ति दोनों को सुरक्षित करने की क्षमता बढ़ाएगा।[42] वास्तव में, रूस और चीन, दोनों ने डब्ल्यूआईओ सहित दुनिया भर में अमेरिका और उसके सहयोगियों को कमजोर करने में दांव लगाया है; और लाल सागर में और उसके आसपास उनके सैन्य अड्डे इस प्रयास में उपयोगी साबित होंगे।

रूस अफ्रीका के साथ अपने संबंधों को भी मजबूत कर रहा है। रूस कई अफ्रीकी देशों के लिए एक प्रमुख हथियार आपूर्तिकर्ता है, और इसने 2019 में सोची में पहले रूस-अफ्रीका शिखर सम्मेलन की मेजबानी की थी।[43] 2019 में, दो रूसी बमवर्षक विमानों ने दक्षिण अफ्रीका की एक असामान्य यात्रा की थी जबकि रूसी नौसेना ने चीनी, ईरानी और दक्षिण अफ्रीकी नौसेनाओं के साथ अभ्यास किया था।[44] ये कदम इस क्षेत्र में रूस की बढ़ती भूमिका और रणनीतिक मामलों में उसकी रुचि की ओर इशारा करते हैं। यह ध्यान देना दिलचस्प है कि क्रेमलिन समर्थित रूसी भाड़े के सैनिकों को आतंकवाद प्रभावित मोज़ाम्बिक और मध्य अफ्रीकी गणराज्य में देखा गया है।[45] ऐसे में, डब्ल्यूआईओ में रूस की वापसी तथा चीन और रूस के बीच बढ़ते सहयोग को हिंद महासागर की उभरती भू-राजनीति के संदर्भ में देखने की जरूरत है। रूस के साथ भारत के पारंपरिक रूप से घनिष्ठ संबंध डब्ल्यूआईओ में भारत-रूस सुरक्षा सहयोग के अवसर खोल सकते हैं, जिसमें रूस द्वारा भारतीय नौसेना को सूडान में अपने अड्डे तक पहुंच प्रदान करना भी शामिल है।

IX. भारत

अपने भौगोलिक स्थान के कारण, भारत हिंद महासागर में केंद्रीय स्थान पर है और माल की मुक्त आवाजाही के लिए वह इस जलमार्ग पर बहुत अधिक निर्भर करता है। 2015 की भारतीय नौसेना की समुद्री सुरक्षा रणनीति में हिंद महासागर के महत्व को उजागर किया गया था जिसमें कहा गया था कि "आईओआर में भारत की केंद्रीय स्थिति, जो मुख्य अंतर्राष्ट्रीय शिपिंग लेन (ISLs) में दोनों ओर फैली है, इसे कई फायदे पहुंचाती है। यह आईओआर के बाहरी छोर पर स्थित है, और लगभग सभी चोकपॉइंट भारत से समान दूरी पर हैं, जिसके कारण इसके समुद्री बलों को पहुंच, जीविका और गतिशीलता की सुविधा पूरे क्षेत्र में प्राप्य है।[46] रणनीति दस्तावेज में आगे कहा गया है कि "भारतीय हित वाले समुद्री क्षेत्रों में भारतीय नौसेना जो अपने निशान छोड़ रही है, उसमें समुद्री पड़ोस में 'सुरक्षा प्रदाता' के रूप में बढ़ते सुरक्षा ढांचे और योगदान के साथ, समुद्री डकैती का मुकाबला करने के लिए तैनाती, समुद्री सुरक्षा, गैर-लड़ाकू निकासी (NEO) और एचएडीआर (HADR) ऑपरेशन शामिल हैं"।[47] फरवरी 2021 में एयरो इंडिया में चीफ ऑफ द एयर स्टाफ कॉन्क्लेव के उद्घाटन सत्र में अपने संबोधन के दौरान रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने भी आईओआर में भारत के एक सुरक्षा प्रदाता होने के विचार को सामने रखा था। उन्होंने कहा था, "भू-राजनीतिक रूप से भारत हिंद महासागर क्षेत्र में एक विश्वसनीय साझीदार है और यह क्षेत्र में एक शुद्ध सुरक्षा प्रदाता होने की भूमिका निभा सकता है..... एचएडीआर (HADR) में सहयोग और समन्वय के लिए भारत नियमित रूप से अपने पड़ोसियों के साथ अभ्यास करता रहा है, जिसका उद्देश्य विशेषज्ञता को साझा करना और क्षमताओं के निर्माण में सहायता करना है।"[48]

आईओआर इस अर्थ में बेहद महत्वपूर्ण है कि भारत के लगभग 90% तेल और व्यापार इसी के ज़रिये होते हैं। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, अदन की खाड़ी से भारतीय आयात 50 बिलियन अमेरिकी डॉलर जबकि कुल निर्यात 60 बिलियन अमेरिकी डॉलर का है।[49] इस मार्ग का इस्तेमाल करने वाले जहाजों के माध्यम से समुद्री व्यापार की सुरक्षा और निर्बाध आवाजाही एक प्राथमिक राष्ट्रीय चिंता है क्योंकि यह भारतीय अर्थव्यवस्था को सीधे प्रभावित करता है। हिंद महासागर के महत्व और इस तक निर्बाध पहुंच की जरूरत को देखते हुए, भारतीय नौसेना अपने बेड़े का तेजी से आधुनिकीकरण कर रही है, अपनी गतिविधियों का विस्तार कर रही है। इसने सक्रिय अभ्यासों, बंदरगाहों की यात्रा, माल के आदान-प्रदान तथा समान विचारधारा वाले सहयोगियों के साथ सहयोग-समन्वय और आपदा राहत कार्यक्रमों को सक्रिय कर, इस क्षेत्र में अपने कद को ऊंचा किया है। भारतीय नौसेना ने 2008 में अदन की खाड़ी में अपना पहला समुद्री डकैती रोधी ऑपरेशन भी शुरू किया था। इस क्षेत्र के महत्व को प्रधानमंत्री मोदी ने 2018 में शांगरी ला में अपने संबोधन के दौरान भी उजागर किया था, जहां उन्होंने कहा था, "हिंद महासागर विभिन्न संस्कृतियों के क्षेत्रों और शांति एवं समृद्धि के विभिन्न स्तरों को जोड़ता है। इसके पास अब प्रमुख शक्तियों के जहाज भी हैं। दोनों स्थिरता और प्रतिस्पर्धा की चिंताओं को बढ़ाते हैं... इस क्षेत्र में हमारी रुचियां बहुत बड़ी हैं और हमारी व्यस्तताएँ गहरी हैं। हिंद महासागर क्षेत्र में, हमारे रिश्ते मजबूत होते जा रहे हैं। हम अपने दोस्तों और भागीदारों के लिए आर्थिक क्षमताओं के निर्माण में भी मदद कर रहे हैं और समुद्री सुरक्षा में सुधार कर रहे हैं।[50]

पिछले दशकों में, भारत ने इस ओर, क्षेत्र के विभिन्न तटीय राज्यों और द्वीप देशों के साथ सहयोग बढ़ाने के लिए कई द्विपक्षीय और बहुपक्षीय मंच विकसित किए हैं। इसने भारत को उन देशों के लिए एक सक्रिय आर्थिक और रक्षा साझेदार के रूप में उभरने के लिए प्रेरित किया है जो भारत के साथ साझेदारी को मजबूत करना और अपनी आर्थिक एवं सुरक्षा क्षमताओं को

बढ़ाना चाहते हैं। ओमान, मॉरीशस, मेडागास्कर, कोमोरोस और सेशेल्स जैसे राष्ट्रों के साथ संबंधों को विकसित करने पर जोर दिया गया है, जिसमें जरूरत के समय में इन राज्यों की सहायता करना भी शामिल है। उदाहरण के लिए, नवंबर 2020 में, भारत ने हॉर्न में चार देशों (इरिट्रिया, जिबूती, सूडान और दक्षिण सूडान) को खाद्य सहायता भेजी। इसी तरह, फ्रांस[iii], इंडोनेशिया, सिंगापुर, ओमान और अमेरिका जैसे विभिन्न देशों के साथ अपने लॉजिस्टिक समझौतों के माध्यम से, भारत की हिंद महासागर में विभिन्न बंदरगाहों तक पहुंच है, जिनकी मदद से इस क्षेत्र में इसका विस्तार हो रहा है।[51]

इसके अतिरिक्त, मॉरीशस में अगलेगा द्वीप और सेशेल्स में अजम्पशन द्वीप में नौसेना के बुनियादी ढांचे के विकास के द्वारा, भारतीय नौसेना क्षेत्र में स्थायी उपस्थिति बनाए रखने में सक्षम होगी। भारत ने भारतीय नौसेना की रणनीति के तहत संचार की समुद्री गलियों की रक्षा के लिए मेडागास्कर में अपनी पहली विदेशी निगरानी सुविधा भी स्थापित की है। भारत ने 2010 में भी एक सूचना संलयन केंद्र- हिंद महासागर क्षेत्र (IFC-IOR) की स्थापना की है। आईएफसी-आईओआर का उद्देश्य "समुद्री डोमेन को लेकर जागरूकता बढ़ाना है, जिसमें जहाजों की पहचान, निगरानी और निरंतर ट्रैकिंग शामिल है, और जो देश के तटीय एवं अपतटीय सुरक्षा द्वारा समुद्र से किसी भी संभावित खतरे को रोकने के लिए आवश्यक है"।[52] जिन प्रमुख केंद्रों पर समुद्री सुरक्षा सूचनाओं का नियमित आदान-प्रदान किया जा रहा है उनमें वर्चुअल क्षेत्रीय समुद्री यातायात केंद्र (VRMTC); समुद्री सुरक्षा केंद्र- हॉर्न ऑफ़ अफ्रीका (MSCHOA), ब्रेस्ट, फ्रांस में; पायरेसी और सशस्त्र डकैती से मुकाबले को क्षेत्रीय सहयोग समझौता (ReCAAP), सिंगापुर

[iii] The recently announced France, UAE and India –trilateral exercises in the Gulf of Oman under the Varuna banner, highlights the growing strategic relevance of Persian Gulf and the Gulf of Oman in the security calculus of these three countries. The exercises slated to be held in April 2021 will include complex interoperability exercises involving carrier strike groups, anti-submarine warfare aircraft and attack submarines. See: *Hindustan Times*, 9 March 2021, https://www.hindustantimes.com/india-news/quad-france-and-uae-join-hands-in-2-naval-exercises-to-dominate-indopacific-101615248156836.html (Accessed on March, 10 2021)

मुख्यालय; इनफार्मेशन फ्यूजन सेंटर- सिंगापुर (IFC-SG); और इंटरनेशनल मैरीटाइम ब्यूरो-पाइरेसी रिपोर्टिंग सेंटर (IMB-PRC) मलेशिया शामिल हैं। आपस में जुड़ा यह नेटवर्क भारत को क्षेत्रीय समुद्री डोमेन जागरूकता बढ़ाने में अधिक प्रमुख भूमिका निभाने में सक्षम बनाता है।[53] 2020 में, भारत एक पर्यवेक्षक के रूप में जिबूती आचार संहिता में शामिल हो गया, जो इसे डब्ल्यूआईओ में समुद्री सुरक्षा में और योगदान करने की अनुमति देगा।

इस क्षेत्र में संलग्नता के अपने प्रयासों को आगे बढ़ाने के लिए, 2015 में भारत सरकार ने सबके लिए सुरक्षा और विकास कार्यक्रम (SAGAR) की शुरुआत की, जिसका उद्देश्य प्राचीन व्यापारिक मार्गों और सांस्कृतिक संबंधों को पुनर्जीवित करना था। प्रधानमंत्री मोदी ने 2015 में मॉरीशस में ऑफशोर पैट्रोल वेसल (ओपीवी) बाराकुडा के उदघाटन कार्यक्रम के दौरान 'सागर' को लेकर अपनी दृष्टि को स्पष्ट किया था। 'सागर'[54] के विजन में पांच तत्व शामिल हैं- *पहला,* भारतीय मुख्य भूमि और द्वीपों की सुरक्षा करना, और एक सुरक्षित, संरक्षित एवं स्थिर हिंद महासागर क्षेत्र सुनिश्चित करना। *दूसरा,* समुद्री पड़ोसियों और द्वीप राज्यों के साथ आर्थिक एवं सुरक्षा सहयोग को गहरा करना, उनकी समुद्री सुरक्षा क्षमताओं और आर्थिक शक्तियों का निर्माण करना। *तीसरा,* इस समुद्री क्षेत्र में शांति और सुरक्षा को आगे बढ़ाने के लिए सामूहिक कार्रवाई और सहयोग करना। इसे समुद्री सहयोग के लिए विभिन्न क्षेत्रीय तंत्रों को मजबूत करने के प्रयासों द्वारा पूरा किया जाना है- पाइरेसी आतंकवाद से लेकर अन्य अपराधों से निपटने तक; समुद्री सुरक्षा और प्राकृतिक आपदाओं तक।

चौथा, इस क्षेत्र में अधिक एकीकृत और सहकारी भविष्य की तलाश करना जो सभी के लिए सतत विकास की संभावनाओं को बढ़ाता है। ऐसा करने के लिए व्यापार, पर्यटन और निवेश में अधिक सहयोग को बढ़ावा देना; बुनियादी ढांचे का विकास; समुद्री विज्ञान और प्रौद्योगिकी; स्थायी मत्स्य पालन; समुद्री पर्यावरण की सुरक्षा; और, नीली अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दिया जाना है।

इसमें, हिंद महासागर रिम एसोसिएशन क्षेत्र में एक स्थायी और समृद्ध भविष्य की दृष्टि को आगे बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन हो सकता है। *पांचवां,* इस क्षेत्र में रहने वाले लोगों पर हिंद महासागर में शांति, स्थिरता और समृद्धि को बनाए रखने की प्राथमिक जिम्मेदारी है। इसमें भारत संवाद, अभ्यास, क्षमता निर्माण और आर्थिक साझेदारी के द्वारा सभी हितधारकों (समुद्र तटीय और सुदूर) के साथ जुड़ने के लिए तैयार है।

'सागर' की दृष्टि को बढ़ावा देने के लिए, भारत ने वर्तमान में चल रही महामारी के दौरान हिंद महासागर के देशों को सहायता देने के मकसद से 2020 में तीन महत्वपूर्ण मिशन शुरू किए। इन मिशनों ने भारत के रुख को "एक भरोसेमंद साथी और भारतीय नौसेना को पसंदीदा सुरक्षा भागीदार और प्रथम उत्तरदाता" के रूप में रेखांकित किया।[55] सागर-1 मिशन को मई 2020 में मालदीव, मॉरीशस, सेशेल्स, मेडागास्कर और कोमोरोस के लिए खाद्य पदार्थों, कोविड से संबंधित दवाओं और चिकित्सा सहायता टीम पहुँचाने के लिए लॉन्च किया गया था।[56] कोविड-19 महामारी और अन्य प्राकृतिक आपदाओं से लड़ने में राष्ट्रों को सहायता प्रदान करने के अपने प्रयासों को जारी रखने के लिए, भारतीय नौसेना ने अफ्रीकी देशों को खाद्य सहायता प्रदान करने हेतु नवंबर 2020 में अपना सागर-II मिशन शुरू किया। आईएनएस ऐरावत ने भारत से सूडान, दक्षिण सूडान, जिबूती और इरिट्रिया तक खाद्य सहायता पहुंचाई।[57] भारत की एचएडीआर सहायता के हिस्से के रूप में दिसंबर 2020 में सागर-III को लॉन्च किया गया। भारतीय नौसेना के जहाजों ने मध्य वियतनाम और कंबोडिया के बाढ़ प्रभावित लोगों के लिए प्रत्येक एचएडीआर स्टोर में 15 टन सामग्री पहुंचाई।[58] इस क्षेत्र में अपना विस्तार जारी रखते हुए, भारत ने दक्षिणी मेडागास्कर में भीषण सूखे के कारण उत्पन्न मानवीय संकट से निपटने के लिए 1000 मीट्रिक टन चावल और 100,000 एचसीक्यू टैबलेट की खेप भेजकर मेडागास्कर सरकार की तत्काल अपील का जवाब दिया। 3 मार्च 2021 को आईएनएस जलाश्व पोर्ट ऑफ एहोला में भोजन और चिकित्सा सहायता

लेकर गया।[59] भारत ने मालागासी स्पेशल फोर्स के निर्माण और प्रशिक्षण के लिए मेडागास्कर में भारतीय नौसेना प्रशिक्षण दल भी भेजा।

हिंद महासागर की अपनी वृहत रणनीति के तहत, भारत ने 1997 में आईओआर-एआरसी [बाद में हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (IORA)] के गठन में प्रमुख भूमिका निभाई है। इसका उद्देश्य हिन्द महासागर के तटीय राज्यों के लिए एक मंच तैयार करना था, जहाँ उनकी साझा चिंताओं और सामान्य हितों पर चर्चा की जा सके। इसमें क्षेत्रीय संदर्भ में समुद्री सुरक्षा के साथ-साथ उभरती हुई पारंपरिक और गैर-पारंपरिक सुरक्षा, समुद्री डकैती, अवैध मछली पकड़ने, मानव और हथियारों की तस्करी, ड्रग तस्करी और जलवायु परिवर्तन शामिल हैं। इसी तरह, 2008 में भारत ने हिंद महासागर के नौसैनिक संगोष्ठी (IONS) को लॉन्च किया, जिसका उद्देश्य हिंद महासागर के सभी तटीय देशों को पारस्परिक रूप से सहमत क्षेत्रों में बेहतर क्षेत्रीय सुरक्षा प्रदान के लिए एक मंच प्रदान करना था। संगोष्ठी का उद्देश्य नौसेना पेशेवरों के बीच सूचना के प्रवाह को उत्पन्न करना है ताकि एचएडीआर, सूचना सुरक्षा, अंतर-संचालन और समुद्री सुरक्षा जैसे सामान्य हित के क्षेत्रों में एक सामान्य समझ और सहकारी समाधान को विकसित किया जा सके।[60] ये दोनों पहल इस क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा में भारत के बढ़ते कदम और इन महत्वपूर्ण एसएलओसी की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाए जाने के संकेत हैं।

X. यूरोपीय हितधारक

जहाँ हिंद महासागर भारत की चिंता का सबसे मुख्य समुद्री स्थल है, वहीं यूरोप के लिए सबसे प्रमुख रणनीतिक चिंता का कारण भूमध्यसागर, मध्य-पूर्व और उत्तरी अफ्रीका है- जिसमें बाद वाले दोनों के कुछ हिस्से डब्ल्यूआईओ में आते हैं। इसलिए, यूरोपीय संघ (ईयू) और उसके सदस्य राज्य इस क्षेत्र की समुद्री सुरक्षा में सक्रिय हैं, विशेष रूप से ऑपरेशन अटलांटा

(ATALANTA) के तत्वावधान में सोमालिया के तट पर एंटी-पायरेसी ऑपरेशन में। चूँकि यूरोप का 30 प्रतिशत व्यापार एशिया के साथ होता है, और माल की आवाजाही इन एसएलओसी के जरिये ही होती है, अत: समुद्री गलियारों की सुरक्षा सुनिश्चित करना यूरोपीय संघ के सदस्य राज्यों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

यूरोपीय संघ ने 2019 के अपने फैक्टशीट 'एशिया और उसके आसपास सुरक्षा सहयोग में बढ़ोतरी" में समुद्री सुरक्षा की महत्ता को स्वीकार किया है। इसमें यूरोपीय समृद्धि तथा एशियाई शांति एवं सुरक्षा को निकटता से सम्बद्ध मानते हुए एक खुले और सुरक्षित समुद्री क्षेत्र में योगदान पर जोर दिया गया है।[61] जहाँ पांच यूरोपीय देशों ने (फ्रांस, ब्रिटेन, नीदरलैंड, यूके और जर्मनी) क्षेत्र में अपनी प्राथमिकताओं को रेखांकित करते हुए अपनी इंडो-पैसिफिक नीतियों को सामने रखा है, वहीं मौजूदा पत्र विशेष रूप से डब्ल्यूआईओ में तीन यूरोपीय अभिनेताओं की उपस्थिति पर गौर करता है। ईयू की फ्रांस और यूके के साथ विभिन्न पहलों के ज़रिये क्षेत्र में पर्याप्त उपस्थिति है, जिन्हें अपने औपनिवेशिक अतीत के साथ-साथ क्षेत्र में दीर्घकालिक तैनाती के कारण पारंपरिक शक्तियों के तौर पर जाना जाता है। पत्र में इन सबको स्थान दिया गया है।

1. यूरोपीय संघ

यूरोपीय संघ इस क्षेत्र में 2008 से ही सक्रिय है जब इसने समुद्री डकैती रोधी अभियान को लॉन्च किया था। तबसे, इसने डब्ल्यूआईओ में समुद्री सुरक्षा को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण रूप से अपने वित्तीय और रणनीतिक संसाधनों को समर्पित किया है। ब्रुसेल्स अपनी आंतरिक स्थिरता और आर्थिक विकास के लिए हिंद महासागर में स्थिरता को केंद्रीय महत्व देता है। इसे यूरोपीय संघ की 2014 की समुद्री सुरक्षा रणनीति में उजागर किया गया था जिसमें उसके हितों को

विस्तार से समझाया गया था। इनमें "क्षेत्रीय सुरक्षा, अंतर्राष्ट्रीय समुद्री सहयोग एवं शांति, महत्वपूर्ण समुद्री अवसंरचना का संरक्षण, नौपरिवहन की स्वतंत्रता, समुद्र में आर्थिक हितों की सुरक्षा, सामान्य स्थितिजन्य जागरूकता, अंतर्वर्गीय समन्वय, सूचना साझाकरण और अंतर-संचालन" शामिल थे।[62] इस क्षेत्र के लिए एक बहुक्षेत्रीय दृष्टिकोण को बढ़ावा देकर- प्रशिक्षण, सूचना साझाकरण, समुद्री डोमेन जागरूकता के साथ, समुद्र तटीय राज्यों के साथ सहयोग के द्वारा- यूरोपीय संघ ने डब्ल्यूआईओ में पैर जमा लिया है। इस क्षेत्र के लिए इसके चार प्रमुख आयाम हैं- यूरोपीय संघ के नौसैनिक मिशन, जिबूती कोड, समुद्री सुरक्षा (एमएएसई) और यूरोपीय संघ क्रिटिकल मेरीटाइम रूट इंडियन ओसियन (CRIMARIO)।

पहला, क्षेत्र में ईयू के तीन सक्रिय मिशन हैं- ईयू नौसेना बल (EU NAVFOR) अटलांटा (ATALANTA) को सीएसडीपी फ्रेमवर्क के तहत दिसंबर 2008 में लॉन्च किया गया था। ऑपरेशन अटलांटा (ATALANTA) के लिए अधिदेश को दिसंबर 2020 में विस्तारित किया गया, जिसमें हथियारों और नशीले पदार्थों की तस्करी का मुकाबला करने तथा समुद्र में अवैध गतिविधियों की निगरानी करने जैसे द्वितीय स्तर के कार्यों को शामिल किया गया था। 2012 में शुरू किया गया, ईयूसीएपी (EUCAP) सोमालिया (पहले EUCAP नेस्टर) एक नागरिक मिशन है जिसका उद्देश्य सोमालिया में समुद्री नागरिक कानून प्रवर्तन क्षमता के निर्माण में योगदान करना है; तीसरा है, यूरोपीय संघ प्रशिक्षण मिशन- सोमालिया (EUTM सोमालिया), इसे 2010 में शुरू किया गया था और यह यूरोपीय संघ का एक सैन्य प्रशिक्षण मिशन है जिसका उद्देश्य सोमाली राष्ट्रीय सशस्त्र बल (SNAF) के सदस्यों को सैन्य प्रशिक्षण प्रदान करके सोमाली राष्ट्रीय सरकार (एसएनजी) और सोमालिया की संस्थाओं को मजबूत करना है। ये तीनों मिलकर, अर्थात ईयू नौसेना बल (EU NAVFOR), ईयूसीएपी (EUCAP) और यूरोपीय संघ प्रशिक्षण मिशन-सोमालिया (EUTM सोमालिया) हॉर्न ऑफ़ अफ्रीका के लिए यूरोपीय संघ के रणनीतिक ढांचे का

निर्माण करते हैं। कुल मिलाकर, यूरोपीय परिषद ने तीनों अभियानों के लिए अधिदेश को 31 दिसंबर 2022 तक बढ़ा दिया है। इन तीन अभियानों के अलावा, यूरोपीय नौसेना बल नाटो के ऑपरेशन ओसियन शील्ड और यूएस कंबाइंड मैरीटाइम फोर्सेज के मल्टीनेशनल कंबाइंड टास्क फोर्स (CTF) 151 में भी सक्रिय भागीदार हैं।

दूसरा, 2009 में स्थापित जिबूती आचार संहिता (DCOC) का उद्देश्य डब्ल्यूआईओ, अदन की खाड़ी और लाल सागर में समुद्री डकैती और सशस्त्र डकैती का मुकाबला करना है। यूरोपीय संघ ने इस क्षेत्र में जिबूती आचार संहिता (DCOC) के ज़रिये एक विश्वसनीय पर्यवेक्षक की भूमिका निभाई है। इसके तहत इसने क्षेत्र में सुरक्षा संरचना का विस्तार करने के लिए यमन, केन्या आदि देशों में सूचना साझाकरण केंद्र और जिबूती में एक समुद्री प्रशिक्षण केंद्र का निर्माण किया है। इसने मेडागास्कर में सूचना संलयन केंद्र (IFC) तथा सेशेल्स में क्षेत्रीय समुद्री परिचालन समन्वय केंद्र (RMOCC) के संचालन में भी सक्रिय रूप से सहायता की है।[63]

तीसरा, यूरोपीय संघ द्वारा प्रायोजित तथा 2012 में शुरू किए गए समुद्री सुरक्षा (एमएएसई) कार्यक्रम का उद्देश्य समुद्री डकैती को रोकना और समुद्री सुरक्षा के लिए पूर्वी एवं दक्षिणी अफ्रीका-हिंद महासागर क्षेत्र की क्षमता को मजबूत करना है। यह समुद्री अपराध का मुकाबला प्रभावी ढंग से करने के लिए कानून प्रवर्तन क्षमता को विकसित करने और मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण रहा है। चौथा, यूरोपीय संघ ने 2015 में पूर्वी अफ्रीकी देशों के साथ स्थितिजन्य समुद्री जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से यूरोपीय संघ क्रिटिकल मेरीटाइम रूट इंडियन ओसियन (CRIMARIO) का शुभारंभ किया।[iv] सीआरआईएमएआरआईओ (CRIMARIO) प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण अभ्यास के द्वारा पूरे क्षेत्र में सूचना साझाकरण केंद्रों के समन्वय और अंतर-

[iv] The sharing and fusion of data from various sources to achieve a comprehensive understanding of the maritime domain and to promote its security and safety.

संचालन को बढ़ावा देना चाहता है। इसने आईओआरआईएस (IORIS) के नाम से वेब-आधारित सूचना साझाकरण और घटना प्रबंधन नेटवर्क के शुभारंभ जैसी कई पहलों को लागू किया है।[64] 2020 में, यूरोपीय संघ ने अफ्रीका से एशिया तक अपने भौगोलिक दायरे का विस्तार करने के लिए सीआरआईएमएआरआईओ (CRIMARIO) के अधिदेश को अपडेट किया। सीआरआईएमएआरआईओ (CRIMARIO)-II "अंतर-वर्गीय, अंतर-एजेंसी और अंतर-क्षेत्रीय सहयोग के माध्यम से" समुद्री क्षेत्र को सुरक्षित रखने में योगदान करने पर आधारित है।[65] यह विस्तारित अधिदेश उस प्राथमिकता को उजागर करता है जो अब एशियाई साझेदारों को सूचना साझाकरण, अंतर-एजेंसी समुद्री निगरानी और अंतर्राष्ट्रीय कानून के अनुपालन एवं समुद्री सुरक्षा हितों के दायरे का विस्तार करने के लिए दी जा रही है।

सीआरआईएमएआरआईओ (CRIMARIO) और एमएएसई (MASE) के साथ, ईयू क्षेत्र में अपनी दो महत्वपूर्ण विशेषज्ञताओं को सामने लाने में सक्षम हो पाया है- “सीआरआईएमएआरआईओ (CRIMARIO) प्रशिक्षण और समुद्री सूचना साझा करने के क्षेत्र में अपनी विशेषज्ञता रखता है"[66] और “एमएएसई (MASE) शासन के क्षेत्र के साथ ही समुद्री मुद्दों पर ज्ञान के मुक्त प्रवाह, समुद्री जानकारी साझा करने और समुद्री अपराध के खिलाफ लड़ाई के मामले में विशेषज्ञता रखता है।“

2. फ्रांस

हिंद महासागर में फ्रांस की खास स्थिति को रेखांकित करते हुए, फ्रांसीसी रणनीति पर एक पत्र में, इसाबेल सेंट-मेजार्ड ने तर्क दिया है कि "कई मायनों में, हिंद महासागर में फ्रांस की उपस्थिति वैश्विक पहुँच के साथ एक मध्य शक्ति बनने की उसकी महत्वाकांक्षा को दर्शाती है।“[67] फ्रांस के लिए, हिंद महासागर निम्नलिखित कारणों से महत्वपूर्ण है- पहला, इसे क्षेत्र का एक पारंपरिक

खिलाड़ी माना जाता है। 16वीं-18वीं शताब्दियों के बीच, फ्रांस अपने औपनिवेशिक साम्राज्य के साथ एक वैश्विक समुद्री शक्ति था जिसमें हिंद महासागर के कई द्वीपसमूह जैसे कि मेडागास्कर, रियूनियन द्वीप, कोमोरोस आदि तथा पांडिचेरी, जिबूती जैसे प्रमुख व्यापारिक स्थान शामिल थे। तब से, इसने एक वैध क्षेत्रीय शक्ति के रूप में हिंद महासागर में विशेष स्थिति का दावा किया है। आज, ये दावे डब्ल्यूआईओ में फ्रांस के विदेशी अधिकार क्षेत्रों रियूनियन द्वीप और मैयोटे की उपस्थिति के आधार पर उचित ठहराए जाते हैं। चूँकि ये इसके विदेशी क्षेत्र हैं, अत: फ्रांस इनके विशेष आर्थिक क्षेत्रों के साथ-साथ समुद्री अधिकारों का लाभ लेता है।

दूसरा, यह क्षेत्र सामरिक महत्व का है क्योंकि फ्रांस का अधिकांश व्यापार क्षेत्र इसी क्षेत्र से गुजरता है और यह इसकी ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए भी आवश्यक है। हिंद महासागर रणनीतिक रूप से यूरोप और एशिया के बीच स्थित है, और इसके समुद्री मार्गों का उपयोग कच्चे तेल के आयात के लिए किया जाता है। साथ ही, इन सामरिक एसएलओसी के ज़रिये यूरोप और एशिया के बीच अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि के साथ, फ्रांस ने नौपरिवहन और समुद्री लेन के संरक्षण में भारी निवेश किया है क्योंकि माल या कच्चे तेल की आवाजाही में कोई भी व्यवधान फ्रांस और यूरोप की अर्थव्यवस्थाओं पर स्थायी प्रभाव डाल सकता है।

तीसरा, हिंद महासागर सुरक्षा से संबंधित गतिविधियों के लिए भी महत्वपूर्ण है। इसका परिणाम रियूनियन द्वीप (पोइंटे डेस गैलेट्स) और मायोटे में फ्रांस की स्थायी रूप से सैन्य उपस्थिति, स्थायी आवासीय गश्ती जहाजों, युद्धपोतों और छोटे प्रतिक्रिया बलों के रूप में सामने आया है, जो अफ्रीकी साझेदारों के साथ समुद्री निगरानी और प्रशिक्षण सत्रों में सहायता करते हैं। इसके अलावा, फ्रांस जिबूती में भी स्थायी उपस्थिति रखता है। जिबूती में सैन्य उपस्थिति यह सुनिश्चित करती है कि फ्रांस की पूर्वी अफ्रीका में और फारस की खाड़ी तथा भूमध्यसागर के बीच स्थित महत्वपूर्ण एसएलओसी के क्षेत्रों में रणनीतिक उपस्थिति है। 2009 में, इसने अबू

धाबी में अपना सैन्य अड्डा *कैंप डे ला पैक्स* स्थापित किया जो तीन सैन्य शिविरों से मिलकर बना है- थल सेना, नौसेना बेस और अल-धफरा के पास एक हवाई अड्डा, जो रणनीतिक रूप से ओमान की खाड़ी और फारस की खाड़ी के बीच होर्मुज के जलडमरूमध्य में स्थित है, और फ्रांस को इस प्रमुख वैश्विक तेल आपूर्ति मार्ग पर एक स्थायी उपस्थिति प्रदान करता है।[68] फ्रांस के इन चार सैन्य ठिकानों- रियूनियन आइलैंड, मयोटे, जिबूती और यूएई को "क्वाड्रिलाटेर फ्रांसिस" (फ्रांसीसी चतुर्भुज) के रूप में जाना जाता है, जो डब्ल्यूआईओ में इसके हितों की रक्षा करता है और एसएलओसी की निरंतर निगरानी प्रदान करता है।[69] इसकी अपनी सैन्य उपस्थिति के अलावा, फ्रांस यूरोपीय संघ के ऑपरेशन अटलांटा और ईयूसीएपी नेस्टर तथा नाटो के महासागर शील्ड संचालन में भी योगदान देता है। फ्रांस 2007 से ही सोमालिया के लिए विश्व खाद्य कार्यक्रम के जहाजों की रक्षा के लिए ऑपरेशन चला रहा है।[70]

चौथा, फ्रांस विभिन्न क्षेत्रीय मंचों में भी प्रमुखता से शामिल है। यह 2001 में आईओआरए का संवाद सहयोगी और 2020 में एसोसिएशन का स्थायी सदस्य बन गया। यह हिंद महासागर आयोग का संस्थापक सदस्य भी है, जिसे 1984 में छोटे द्वीप राष्ट्रों को आर्थिक तौर पर विकसित करने तथा उन्हें सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से स्थापित किया गया था। फ्रांस आईओएनएस का एक सक्रिय सदस्य भी है जिसे 2008 में इसके सदस्यों और पर्यवेक्षक राज्यों की नौसेना एवं समुद्री एजेंसियों के बीच अंतर-संचालन को बढ़ाने के लिए स्थापित किया गया था। साथ में मिलकर ये फ्रांस को अपनी रुचि और प्रोजेक्टिंग शक्ति की रक्षा करने में समर्थ बनाते हैं और उसे डब्ल्यूआईओ में एक प्रमुख भूमिका निभाने की अनुमति देते हैं।

3. यूनाइटेड किंगडम

19वीं और 20वीं सदी के ज्यादातर समय में, हिंद महासागर को "ब्रिटिश झील" कहा जाता था क्योंकि भारत, ओमान, केप टाउन, सीलोन, मालदीव, मॉरीशस, और केन्या आदि में इसकी औपनिवेशिक उपस्थिति थी।[71] इसने ब्रिटेन को हिंद महासागर के प्रमुख चोक बिंदुओं पर नियंत्रण दे दिया। 20वीं शताब्दी में उपनिवेशवाद के पतन की लहरों ने ब्रिटिश शाही नौसेना के लंबे समय से स्थापित नियंत्रण का अंत कर दिया और यह क्षेत्र के कई ठिकानों से पीछे हट गया।

1965 से, ब्रिटेन ने ब्रिटिश हिंद महासागर क्षेत्र (BIOT)[v] के ज़रिये इस क्षेत्र में अपनी उपस्थिति बनाए रखी है जिसे चागोस द्वीपसमूह के रूप में जाना जाता है। यह द्वीपसमूह डिएगो गार्सिया में अमेरिकी रणनीतिक नौसैनिक सहायता सुविधा का घर भी है। डिएगो गार्सिया पर अड्डे की सुविधाएं प्रदान करना यूएस-यूके सुरक्षा सहयोग की एक प्रमुख सुरक्षा विशेषता है। इस सैन्य अड्डा की अवस्थिति रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हिंद महासागर के केंद्र में है, और यहाँ से सभी प्रमुख शिपिंग लेन और क्षेत्र के रिम एवं द्वीप राज्यों तक पहुंच लगभग एक समान है। डिएगो गार्सिया बेस वृहत हिंद महासागर में अमेरिकी नौसेना को सक्रिय उपस्थिति बनाए रखने की अनुमति देता है। इस बेस में समुद्री गश्ती विमान और विशेष रूप से अमेरिकी वायु सेना के भारी बमवर्षक मौजूद हैं, जो 1991 के बाद से पूरे दक्षिण-पश्चिम एशिया में अमेरिका के प्रमुख लड़ाकू अभियानों का हिस्सा रहे हैं।[72]

इस द्वीपसमूह की संप्रभुता को लेकर ब्रिटेन और मॉरीशस के बीच स्पर्धा रही है। मॉरीशस का दावा था कि इसे 1965 में स्वतंत्रता के लिए हिंद महासागर में द्वीपसमूह से व्यापार करने के लिए मजबूर किया गया था। दूसरी तरफ, ब्रिटेन का कहना है कि वह मॉरीशस के संप्रभुता के

[v]The British Indian Ocean Territory (BIOT), an archipelago of 58 islands covering some 640,000 sq km of ocean, is a British Overseas Territory. See: https://biot.gov.io/about/ (Accessed March 10, 2021)

दावे को मान्यता नहीं देता है। ब्रिटेन का विदेश एवं राष्ट्रमंडल कार्यालय (FCO) पहले भी कहता रहा है, और उसने फिर जोर देकर कहा है कि द्वीपों पर उसका अधिकार है- "ब्रिटेन को इसमें कोई संदेह नहीं है क्योंकि ब्रिटिश हिंद महासागर क्षेत्र (BIOT) पर हमारी संप्रभुता है, जो 1814 से निरंतर ब्रिटिश संप्रभुता के अधीन है। बीआईओटी पर कभी भी मॉरीशस की संप्रभुता नहीं रही है और ब्रिटेन इस दावे को मान्यता नहीं देता है।"[73] फरवरी 2019 में इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ़ जस्टिस (ICJ) ने फैसला सुनाया कि सुदूर हिंद महासागर के द्वीपसमूह पर अंग्रेज़ों का कब्जा अवैध था। इसके बाद 22 मई 2019 को, संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा मतदान कराया गया, जिसमें 6 की तुलना में 116 के भारी बहुमत से यह मांग की गई कि ब्रिटेन छह महीने के भीतर "द्वीपसमूह पर अपने कब्जे को बिना शर्त" समाप्त कर दे।[74] ब्रिटेन ने सलाहकार के तौर पर इस राय को खारिज कर दिया, जिसके बाद मॉरीशस को समुद्र के कानून के लिए गठित संयुक्त राष्ट्र के अंतर्राष्ट्रीय न्यायाधिकरण, हैम्बर्ग जाना पड़ा। ट्रिब्यूनल ने जनवरी 2021 में, मॉरीशस के पक्ष में फैसला सुनाया और "दिसंबर 2019 तक क्षेत्र को उसके पूर्व उपनिवेश, मॉरीशस को सौंपने में ब्रिटेन की विफलता की आलोचना की, जिसकी पहले संयुक्त राष्ट्र की महासभा में सर्वसम्मति से मांग की गई थी।"[75] अब तक, यूके और अमेरिका दोनों का तर्क रहा है कि "सुरक्षा के मुद्दे मुट्ठी भर छोटे, और कम आबादी वाले द्वीपों के स्वामित्व को लेकर भावनात्मक तर्कों से कहीं ऊपर होते हैं।"[76]

यूके हिंद महासागर में अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति को लगातार बनाए हुए है। इसके नौसैनिक बलों को 1980 के दशक में ईरान-इराक युद्ध के दौरान तैनात किया गया था और तब से, इसने अपनी आर्मिलिया गश्ती के ज़रिये फारस और ओमान की खाड़ी में मौजूदगी को बनाए रखा है, ताकि क्षेत्र में वाणिज्यिक समुद्री यातायात की सुरक्षा के लिए एक स्थायी गश्त को स्थापित किया जा सके। 1991 के खाड़ी युद्ध के दौरान, लाल सागर को शामिल करने के लिए ऑपरेशन

के क्षेत्र का विस्तार किया गया था। यूके 2003 में इराक के खिलाफ ऑपरेशन के दौरान भी नौसैनिक इकाइयों की तैनाती के द्वारा सक्रिय रूप से शामिल था। 2003 से लेकर मई 2011 तक, रॉयल नेवी ने इराकी नाविकों और नौसैनिकों को भी प्रशिक्षित किया।[77] यूके यूरोपीय संघ के ऑपरेशन अटलांटा और नाटो के ऑपरेशन महासागर शील्ड के तहत अदन की खाड़ी में एंटी-पायरेसी मिशन में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है।

ब्रिटेन ने बहरीन में एक स्थायी सैन्य बेस खोला ताकि यह क्षेत्र में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में अपनी उपस्थिति और भूमिका को बढ़ावा दे सके। 1970 के दशक से यह स्वेज के पूर्व में इसका पहला ठिकाना है। मीना सलमान स्थित यूके नेवल सपोर्ट सुविधा में 500 सैनिकों, नाविकों और एयरमैन को आश्रय दिया जा सकता है। यह ठिकाना रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह फारस की खाड़ी में यूके के ऑपरेशन का समर्थन करेगा और इसके नए विमान वाहक एचएमएस क्वीन एलिजाबेथ और एचएमएस प्रिंस ऑफ वेल्स की मेजबानी भी करेगा।[78] इसी तरह, यूके ने ओमान के साथ सुरक्षा संबंधों का विस्तार किया है। यूके की सरकार ने डुकम बंदरगाह के पास एक स्थायी ब्रिटिश संयुक्त लॉजिस्टिक सपोर्ट बेस स्थापित करने के लिए 2016 में इस देश के साथ संयुक्त साझेदारी की घोषणा की है। भू-राजनीतिक रूप से, यह बेस हिंद महासागर में यूके को कई फायदे पंहुचाता है, "दक्षिण में अदन की खाड़ी की ओर से, पूर्व में अरब सागर से और उत्तर में होर्मुज के जलडमरूमध्य से खाड़ी में प्रवेश दिलाता है। यह अदन की खाड़ी में एंटी-पायरेसी ऑपरेशंस को जारी रखने के लिए यूके की अधिक प्रभावी तैनाती को सक्षम बनाएगा।"[79] इसके बाद ब्रिटेन और ओमान ने 2019 में एक नए संयुक्त रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसके बाद रॉयल नौसेना की पोर्ट ऑफ डुकम में ठहर जाने की पुष्टि हो गई।[80]

यूके द्वारा हिंद महासागर पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित किये जाने को इस तरह से समझा जा सकता है कि यह देश ब्रेक्सिट के बाद की स्थिति को आकार देने की कोशिश कर रहा है। ब्रिटेन

ने अपना ध्यान फिर से स्वेज के पूर्व के समुद्री क्षेत्र में केन्द्रित कर दिया है और यह इस क्षेत्र में उभरती हुई गतिकी का हिस्सा बनने के लिए अपनी रणनीति पर बल दे रहा है। इस सबसे बढ़कर, चूँकि ब्रेक्सिट के बाद का यूके क्षेत्र में अपने आर्थिक सहयोग को बढ़ाने के लिए एशिया पर ध्यान केंद्रित कर रहा है, ऐसे में क्षेत्र के एसएलओसी का महत्व इस देश की बढ़ती नौसैनिक उपस्थिति को जायज ठहराने में बड़ा मुद्दा बन जाएगा।

XI. पश्चिम एशियाई शक्तियाँ

जैसा कि पहले कहा गया है, यमन और ओमान जैसे पश्चिम एशियाई राज्य डब्ल्यूआईओ के अभिन्न अंग हैं। इसके अलावा, डब्ल्यूआईओ की भूस्थैतिक गणना में लाल सागर महत्वपूर्ण है। इस प्रकार, लाल सागर क्षेत्र में पश्चिम एशियाई राज्यों की गतिविधियाँ तथा यमन जैसे संघर्षों में उनकी भागीदारी डब्ल्यूआईओ की क्षेत्रीय भू-राजनीति के संदर्भ में महत्वपूर्ण घटनाक्रम हैं।

ऐतिहासिक रूप से, लाल सागर ने अफ्रीका को पश्चिम एशिया से अलग कर दिया था। हालांकि, पिछले कुछ वर्षों में, लाल सागर पश्चिम एशियाई प्रतिद्वंद्वियों तथा हॉर्न ऑफ़ अफ्रीका की भू-राजनीति के बीच एक कड़ी के रूप में उभरा है। जहाँ एक तरफ उत्तरी डब्ल्यूआईओ में कतर और तुर्की तथा दूसरी ओर संयुक्त अरब अमीरात और सऊदी अरब के बीच प्रतिद्वंद्विता है, वहीं सूडान, इरिट्रिया और इथियोपिया जैसे राज्य इन पश्चिम एशियाई शक्तियों के साथ अधिक गहरे संबंधों की स्थापना कर रहे हैं। ईरान और इज़राइल भी इस नई भू-राजनीति में सक्रिय हैं। नतीजतन, डब्ल्यूआईओ एक जटिल रणनीतिक परिदृश्य का घर बन गया है, जिसमें क्षेत्रीय खिलाड़ियों के साथ ही प्रमुख शक्तियां भी अपना प्रभाव स्थापित करने के लिए जूझ रही हैं और अपने रणनीतिक हितों को आगे बढ़ाने के लिए एक अनुकूल क्षेत्रीय वातावरण बनाने का प्रयास

कर रही हैं। इस क्षेत्र में सैन्य ठिकाने खोलने की इच्छा इन शक्तियों की दिलचस्पी को सबसे सशक्त ढंग से दर्शाती है।

यूएई उत्तरी डब्ल्यूआईओ के सबसे सक्रिय खाड़ी राज्यों में से एक रहा है। हॉर्न ऑफ अफ्रीका में इसके महत्वपूर्ण आर्थिक और सैन्य हित हैं। यूएई की विदेश नीति की प्राथमिकताएं, यानी ईरानी प्रभाव पर अंकुश लगाना और कतर एवं तुर्की द्वारा समर्थित राजनीतिक इस्लाम के प्रसार को सीमित करना, इसे क्षेत्र में व्यापक भूमिका निभाने के लिए प्रेरित कर रही हैं। यह बंदरगाहों को विकसित करके भी क्षेत्र में अपने प्रभाव का विस्तार करना चाहता है। यही कारण है कि, यह 2015 से यमन के युद्ध में शामिल है और यहाँ पैर जमाने के लिए क्षेत्रीय राज्यों के साथ संबंध बना रहा है।

यूएई इरीट्रिया में अस्साब का बंदरगाह, सोमालिलैंड (सोमालिया से टूट कर बना राज्य) में बेरबेरा और बोसस्सो में पुंटलैंड (सोमालिया) को विकसित कर रहा है।[81] यह यमन के तट पर स्थित सोकोट्रा और पेरिम द्वीपों जैसे रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण कई द्वीपों को भी नियंत्रित करता है। यह अदन के बंदरगाह शहर सहित यमनी तट के कुछ हिस्सों पर नियंत्रण रखता है।[82] अदन कभी ब्रिटिश साम्राज्य की रणनीति में एक प्रमुख सैन्य ठिकाना था और आज भी बाब-अल-मंदेब से गुजरने वाले वैश्विक तेल आपूर्ति की निगरानी के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है। बढ़ती कूटनीतिक भूमिका और सैन्य प्रोफ़ाइल के द्वारा, यूएई अब लाल सागर के तट की क्षेत्रीय राजनीति और सुरक्षा को नए सिरे से गढ़ना चाहता है।[83] इसके अलावा, लाल सागर तट से जुड़ी सैन्य सुविधाएं और बाब-अल-मंदेब जलसन्धि के पास मजबूत उपस्थिति यूएई को सक्षम बनाती हैं। यमनी बंदरगाहों और समुद्र तट पर यूएई का नियंत्रण यमनी संघर्ष के प्रक्षेपवक्र पर निर्भर करता है। हालांकि, इरिट्रिया, सोमालिलैंड और पुंटलैंड में पैर जमा लेने के बाद इस क्षेत्र में यूएई के राजनीतिक-सैन्य प्रोफ़ाइल के विस्तार की संभावना प्रबल है।

यूएई के अलावा, सऊदी अरब इस भू-राजनीतिक खेल में जुटी एक और बड़ी शक्ति है और 2015 में यमन में सैन्य हस्तक्षेप के बाद से हॉर्न ऑफ़ अफ्रीका में गहरी रुचि ले रहा है। सऊदी अरब खुद ही लाल सागर में एक बड़ी शक्ति है, और उसने भी जिबूती में एक सैन्य अड्डा खोलने में दिलचस्पी दिखाई है। हालांकि, सैन्य अड्डे के सही स्थान को अभी अंतिम रूप से तय नहीं किया गया है।[84] सऊदी अरब ने इरिट्रिया में सैन्य अड्डा खोलने में यूएई का भी सहयोग किया। साथ ही, सऊदी अरब और यूएई ने दो दशक पुराने इरिट्रिया-इथियोपिया विवाद को समाप्त करने और सूडानी राजनीतिक संक्रमण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[85] परिणामस्वरूप, इरिट्रिया, इथियोपिया और सूडान को अपने साथ जोड़कर सऊदी अरब और यूएई हॉर्न ऑफ़ अफ्रीका में मजबूती से पैर जमाने में कामयाब रहे।

इस बीच, कतर और तुर्की भी क्षेत्र में अपने विस्तार के लिए कदम उठा रहे हैं। राष्ट्रपति रेसेप एर्दोगन के नेतृत्व में तुर्की नव-तुर्कवाद की विदेश नीति रणनीति का अनुसरण कर रहा है और पूर्व तुर्क साम्राज्य के क्षेत्रों में अपने प्रभाव को पुनर्स्थापित कर रहा है।[86] इसके कारण, तुर्की लीबिया से लेकर सोमालिया तक से संबंध बनाने में व्यस्त रहा है। इसने सूडान के सुआकिन में सैन्य अड्डा स्थापित करने की इच्छा जताई है, जो अतीत में एक तुर्क नौसैनिक अड्डा हुआ करता था। यह पहले से ही सोमालिया और लीबिया के राज्यों के साथ मजबूत राजनयिक और सैन्य संबंध बना चुका है। सोमालिया की संक्रमणकालीन संघीय सरकार की क्षमताओं के निर्माण में तुर्की का सैन्य समर्थन महत्वपूर्ण स्थान रखता है। तुर्की ने सोमालिया में एक सैन्य प्रशिक्षण केंद्र खोला है और यह मोगादिशु के हवाई अड्डे और बंदरगाह का संचालन भी करता है।[87] हालाँकि, सऊदी अरब और यूएई क्षेत्र में तुर्की की उपस्थिति पर सावधानी से नज़र रखे हुए हैं, और वे इसके प्रभाव को सीमित करना चाहते हैं।

हॉर्न ऑफ़ अफ्रीका के राज्यों के साथ सक्रिय रूप से संलग्न कतर के साथ भी तुर्की ने मजबूत साझेदारी स्थापित की है। 2017 में तीन खाड़ी शक्तियों (सऊदी अरब, यूएई, और बहरीन) तथा मिस्र द्वारा कतर की नाकाबंदी ने उसे तुर्की के साथ अपने संबंधों को मजबूत करने और हॉर्न ऑफ़ अफ्रीका में सक्रिय रूप से शामिल करने के लिए प्रेरित किया। तुर्की का कतर में एक सैन्य अड्डा है।[88] इसके अलावा, तुर्की की तरह, कतर ने भी सूडान और सोमालिया से संबंध स्थापित करने के लिए कदम उठाए थे। हालांकि, अप्रैल 2019 से सूडान में चल रहे राजनीतिक संक्रमण ने पहले से सहमत अनुबंधों और सूडान में कतर के प्रभाव को लेकर सवाल उठाए गए हैं। सूडान मुस्लिम ब्रदरहुड सहित इस्लामी समूहों को कतरी समर्थन से चिंतित है और वित्तीय एवं राजनयिक अलगाव से बाहर निकलना चाहता है।[89] इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सऊदी अरब और यूएई के साथ गहरे संबंध और इज़राइल तथा अमेरिका के साथ संबंधों का विस्तार जरूरी है। इसके कारण सूडान में कतर को प्रभाव का नुकसान उठाना पड़ा है। तुर्की-कतर की साझेदारी और हॉर्न ऑफ़ अफ्रीका में उनकी चढ़ाई के कारण शक्ति और स्थिरता का जटिल क्षेत्रीय संतुलन बन रहा है।

इन खाड़ी राज्यों के अलावा, इज़राइल भी लाल सागर क्षेत्र में अपने प्रभाव का विस्तार करने में लगा हुआ है। इज़राइल का पहला मकसद क्षेत्र में ईरानी प्रभाव को सीमित करना और उसकी गतिविधियों (जैसे कि अपने प्रतिनिधियों को गुप्त तरीके से हथियारों की आपूर्ति) की निगरानी करना है। इसके लिए, कथित तौर पर, इज़राइल इरीट्रिया में छोटी नौसेना टीमों को रख रहा है[90] और इसने इरीट्रिया में एक श्रवण पोस्ट भी स्थापित किया है। कथित तौर पर, यूएई के सहयोग से इजरायल यमन के तट पर सोकोट्रा में एक जासूसी अड्डे का भी संचालन कर रहा है।[91] खाड़ी में रिश्तों की नई बनावट को देखते हुए, इजरायल-सऊदी-यूएई की एक ईरान विरोधी धुरी का जन्म हुआ है। इन राज्यों की ईरानी प्रभाव को सीमित करने में रुचि है और इसलिए, लाल सागर

क्षेत्र में उनके बीच सहयोग से इंकार नहीं किया जा सकता है। वास्तव में, 2017 में, यमन में हौथी विद्रोहियों के एक प्रवक्ता ने दावा किया है कि इज़राइल भी यमन में सऊदी नेतृत्व वाले युद्ध में भाग ले रहा है और संकेत दिया है कि इरीट्रिया में इज़राइली बेस को निशाना बनाया जा सकता है।[92]

इन पश्चिम एशियाई शक्तियों के बीच भू-राजनीतिक सत्ता का खेल डब्ल्यूआईओ की रणनीतिक तस्वीर को जटिल बना रही है। उनके गठबंधन और जवाबी-गठबंधन, तथा प्रमुख शक्तियों के साथ साझेदारी जटिल क्षेत्रीय सुरक्षा का जाल बना रही है। इस तरह, लाल सागर और हॉर्न ऑफ़ अफ्रीका के आसपास का क्षेत्र, साथ ही साथ अरब/फारस की खाड़ी, डब्ल्यूआईओ में एक पृथक तथा एक-दूसरे से जुड़े रणनीतिक थिएटर के रूप में उभरा है, जिसका क्षेत्र में व्यापक प्रभाव है।

XII. डब्ल्यूआईओ में गैर-पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियां

यद्यपि इस पत्र का फोकस प्रमुख शक्तियों और क्षेत्र में उनकी गतिविधियों पर है, फिर भी डब्ल्यूआईओ बड़े पैमाने पर गैर-पारंपरिक सुरक्षा (एनटीएस) चुनौतियों का सामना कर रहा है। वास्तव में, यह तर्क भी दिया जा सकता है कि डब्लूआईओ की अवस्थिति के स्थायी भूस्थैतिक महत्व के अलावा और परिणामस्वरूप, इंडो-पैसिफिक की भू-राजनीति के लिए इसकी बढ़ती प्रासंगिकता के बावजूद, क्षेत्र में मौजूद गैर-पारंपरिक सुरक्षा (एनटीएस) चुनौतियों ने विदेशी शक्तियों को आकर्षित किया। डब्ल्यूआईओ में कमजोर राज्य क्षमता और एनटीएस चुनौतियों के खिलाफ लड़ाई इन प्रमुख शक्तियों के लिए किसी न किसी रूप में अपनी सैन्य भागीदारी जारी रखने और क्षेत्र में अपनी पैठ बढ़ाने का औचित्य बन गई। इसलिए, अब हमारे पास एक ऐसी स्थिति है जिसमें प्रमुख शक्तियां अपने-अपने प्रभाव के लिए जूझ रही हैं, जबकि उसी समय में

एनटीएस चुनौतियां क्षेत्र में मुसीबतें खड़ी कर रही हैं। इसलिए, इस क्षेत्र में आने वाली समस्याओं को पूरी तरह से समझने और प्रमुख ताकतों के हित का पता लगाने के लिए, एनटीएस चुनौतियों पर एक नज़र डालना आवश्यक है।

एनटीएस चुनौतियां सुरक्षा की अवधारणा को व्यापक बनाती हैं और संकीर्ण विचारों से आगे बढ़कर सैन्य सुरक्षा को विशेषाधिकार प्रदान करती हैं। एनटीएस की चुनौतियों को इस प्रकार परिभाषित किया गया है, "लोगों और राज्यों की भलाई तथा उत्तरजीविता से जुड़ी चुनौतियां जो मुख्य रूप से गैर-सैन्य स्रोतों से उत्पन्न होती हैं।"[93] शीत युद्ध के बाद की दुनिया में एनटीएस के मुद्दों को प्रमुखता मिली और इसमें आतंकवाद, समुद्री डकैती, हथियारों और ड्रग्स की तस्करी, जलवायु परिवर्तन, अवैध, गैर-पंजीकृत और अनियमित (IUU) रूप से मछली पकड़ने आदि जैसे मुद्दे शामिल हो गए।[94] खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा जैसे मुद्दों को भी एनटीएस चुनौतियों का हिस्सा माना जाता है। डब्ल्यूआईओ के राज्य इन चुनौतियों का सामना कर रहे हैं और क्षेत्रीय राज्य, प्रमुख शक्तियां तथा विशिष्ट अंतर्राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय संस्थान इन चुनौतियों से मुकाबला करने में लगे हैं।

1. आतंकवाद

आतंकवाद डब्ल्यूआईओ के लिए एक महत्वपूर्ण एनटीएस चुनौती बना हुआ है। केन्या, तंजानिया, यमन, सोमालिया और मोजाम्बिक जैसे राज्य आतंकवाद से अलग-अलग स्तर पर प्रभावित रहे हैं। पश्चिम एशिया के साथ इस क्षेत्र की निकटता और साथ ही धार्मिक कट्टरवाद और गरीबी जैसी चुनौतियों ने आतंक के खतरे को कई गुना बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वास्तव में, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, अमेरिका ने 2002 में जिबूती में अपना ठिकाना मुख्य रूप से यमन और सोमालिया में आतंकवाद से लड़ाई के लिए ही स्थापित किया था।

डब्ल्यूआईओ में 9/11 के बाद की कुछ प्रमुख आतंकी घटनाओं में केन्या में नैरोबी के वेस्टगेट मॉल पर हमला (2013) और मोगादिशु में घातक बम विस्फोट (2017) शामिल हैं।[95] अमेरिका और केन्या द्वारा शुरू किए गए आतंकवाद-रोधी अभियानों के वर्षों बाद भी, और अफ्रीकी संघ (एयू) की शांति सेना की तैनाती के बावजूद, सोमालिया में अल-शबाब का खतरा प्रबल है।[96] इस्लामिक स्टेट की पूर्वी अफ्रीका में भी कुछ मौजूदगी है।[97]

पिछले कुछ वर्षों में, मोजाम्बिक आतंकी समूहों के लिए एक नया मोर्चा बनकर उभरा है। रूसी और दक्षिण अफ्रीकी भाड़े के सैनिकों की मदद से मोजाम्बिक सुरक्षा बल काबो डेलगाडो के उत्तरी क्षेत्र में आतंकवाद से लड़ रहे हैं। हालांकि, उनके प्रयासों को ज्यादा सफलता नहीं मिली है।[98] उत्तरी मोजाम्बिक में संघर्ष के कारण 420,000 लोगों को विस्थापित होना पड़ा है, और इस स्थिति को "वास्तव में डरावना" बताया गया है।[99] काबो डेलगाडो के तट ऊर्जा-समृद्ध हैं और इसलिए, दोनों पक्षों के दांव ऊंचे हैं।[100] साथ ही, आतंकी खतरे के उद्भव ने विदेशी कंपनियों की निवेश की इच्छा को लेकर गंभीर सवाल उठाए हैं।

2. समुद्री डकैती

हॉर्न ऑफ अफ्रीका, विशेष रूप से अदन की खाड़ी के जलमार्ग समुद्री डकैती के आतंक से ग्रस्त हैं। अपने तटीय क्षेत्रों को सुरक्षित रखने में अक्षम राज्यों तथा रोजगार और विकास के अवसरों के अभाव के कारण समुद्री डाकू निर्भीकता से काम करते हैं और इस क्षेत्र से गुजरने वाले वैश्विक जहाजों के लिए खतरा उत्पन्न करते हैं। 2007 और 2012 के दौरान समुद्री डकैती का आतंक चरम पर था, जब लाल सागर से अरब सागर तक के क्षेत्र लगातार समुद्री डाकुओं के

हमले का सामना कर रहे थे। उदाहरण के लिए, 2011 में इस क्षेत्र में 237 हमले हुए, जिसके परिणामस्वरूप व्यवसायों और बीमाकर्ताओं को 8.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर का नुकसान हुआ।[101]

2008-09 के बाद से, चीन, दक्षिण कोरिया, भारत और जापान सहित प्रमुख शक्तियों ने समुद्री डकैती को रोकने और समाप्त करने के लिए समन्वित नौसैनिक प्रयास शुरू किए हैं।[102] अमेरिका द्वारा की गई अगुवाई के बाद, यूरोपीय संघ ने भी समुद्री डकैती से लड़ने के लिए ऑपरेशन शुरू किए। इन वर्षों में, इस क्षेत्र में यूरोपीय संघ की मौजूदगी का विस्तार हो गया है, क्योंकि यूरोपीय संघ अब सोमालिया में खाद्य असुरक्षा से निपटने के लिए विश्व खाद्य कार्यक्रम के साथ जुड़ गया है।[103] इन सामूहिक प्रयासों से, क्षेत्र में समुद्री डकैती की वारदातों में कमी आई है; हालांकि, प्रमुख शक्तियों के नौसैनिक जहाज अब भी यहाँ तैनात हैं। सबसे उल्लेखनीय नौसैनिक तैनाती चीन से है, जिसने एंटी-पायरेसी कार्यों का समर्थन करने के लिए एक परमाणु पनडुब्बी भेजी थी।[104] समुद्री डकैती और आतंकवाद के बीच संबंध बढ़ रहे हैं, विशेष रूप से सोमालिया और मोजाम्बिक में।

3. ड्रग्स और हथियारों की तस्करी

डब्ल्यूआईओ में ड्रग्स और हथियारों की तस्करी एक गंभीर खतरा बना हुआ है। पिछले कुछ वर्षों में, अमेरिका ने अपने सैन्य अभियानों के दायरे को आतंकवाद से लड़ने और समुद्री डकैती पर अंकुश लगाने से आगे बढ़ाया है और डब्ल्यूआईओ में ड्रग्स और हथियारों की तस्करी जैसे खतरों से निपटकर समुद्री सुरक्षा सुनिश्चित की है। यूएन ऑफिस ऑन ड्रग्स एंड क्राइम (UNODC) जैसी अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियां भी डब्ल्यूआईओ राज्यों के क्षमता निर्माण में लगी हुई हैं ताकि उन्हें तस्करी के खतरे का सामना करने में मदद मिल सके। डब्ल्यूआईओ में, विशेष रूप से, पूर्वी और

दक्षिणी अफ्रीकी तटीय क्षेत्र अफगानिस्तान से भेजे गए हेरोइन के प्रमुख स्थानों के रूप में उभरे हैं। ये आपूर्तियां मुख्य रूप से यूरोप के लिए होती हैं लेकिन पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीकी क्षेत्र में भी इनकी बड़ी खपत होती है। हेरोइन नेटवर्क पाकिस्तान से दक्षिण अफ्रीका तक के क्षेत्र में काफी सक्रिय है और इनकी आपराधिक गिरोहों के साथ-साथ क्षेत्र के राजनीतिक अभिजात वर्ग के साथ भी साठगांठ हैं। हिंद महासागर के अफ्रीकी राज्य हेरोइन के व्यापार और इसके बुरे प्रभावों (जैसे कि क्षेत्र में दर्रों में बंदरगाह बनाना, हिंसा बढ़ना और एचआईवी-एड्स के प्रसार, मनी लॉन्ड्रिंग आदि) से इतने अधिक प्रभावित हुए हैं, कि पूर्व और दक्षिणी अफ्रीकी तटों को 'हेरोइन तट' कहा जाता है।[105]

डब्ल्यूआईओ में अवैध हथियारों की तस्करी भी प्रचलित है। अदन की खाड़ी और लाल सागर के रास्ते ईरान, सोमालिया और स्वेज नहर के बीच के क्षेत्र जिसमें यमन जैसे राज्य शामिल हैं हथियारों की अवैध तस्करी से अत्यधिक चिंतित हैं। यमन में हौथी विद्रोहियों के लिए ईरानी हथियारों की आपूर्ति होती है। अधिक चिंता की बात यह है कि यमन में संघर्ष ने हथियारों की तस्करी के लिए हॉर्न ऑफ़ अफ्रीका को अनुकूल परिस्थितियाँ दे दी हैं। हथियारों की तस्करी सोमालिया में की जाती है और वहां से उन्हें क्षेत्र के अन्य देशों में ले जाया जाता है।[106] ड्रग्स और हथियारों का यह नेटवर्क आतंकवाद और समुद्री डकैती से जुड़ा हुआ है। ये सभी खतरे मिलकर डब्ल्यूआईओ राज्यों को असुरक्षित और अस्थिर बनाते हैं, खासकर पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीका के राज्यों को। इनके नेटवर्क के साथ भ्रष्ट अधिकारियों, राजनेताओं और आपराधिक गिरोहों के बीच संबंध राज्य अधिकारियों के लिए सुरक्षा और विकास संबंधी चुनौतियां पैदा करते हैं। इन समस्याओं की भारी सामाजिक कीमत भी चुकानी पड़ती है।[107]

4. जलवायु परिवर्तन

मेडागास्कर, मालावी, दक्षिण सूडान और जिम्बाब्वे जैसे डब्ल्यूआईओ राज्य जलवायु परिवर्तन से सबसे अधिक प्रभावित राज्यों में से हैं। 2019 में चक्रवात इडाई ने दक्षिण-पश्चिम हिंद महासागर क्षेत्र को तबाह कर दिया था। उसने जिम्बाब्वे में अभूतपूर्व क्षति पहुंचाई थी जिसके कारण कमजोर बुनियादी ढांचे के पुनर्निर्माण और आजीविका के लिए इस गरीब देश को 1 बिलियन अमेरिकी डॉलर की जरूरत आ पड़ी थी। आतंक से पीड़ित मोजाम्बिक भी जलवायु परिवर्तन के मामले में सबसे कमजोर अफ्रीकी देश है। विश्व बैंक के अनुसार, चक्रवातों के कारण आने वाली वार्षिक बाढ़ के कारण मोजाम्बिक को औसतन 440 मिलियन अमेरिकी डॉलर की कीमत चुकानी पड़ी है।[108] इसके अलावा, उत्तर में सूडान से लेकर दक्षिण में जिम्बाब्वे तक फैला क्षेत्र सूखा, चक्रवात और बाढ़ जैसे जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों का लगातार सामना कर रहा है। परिणामस्वरूप, भारत जैसे राज्य नियमित रूप से इन पीड़ित राज्यों को भोजन और चिकित्सा सहायता भेज रहे हैं। आने वाले दशकों में, जलवायु परिवर्तन से प्रभावित घटनाओं में काफी वृद्धि होने की आशंका है और यह क्षेत्र इस तरह की आपदाओं का गवाह बनेगा।

5. अवैध, गैर-पंजीकृत और अनियमित (IUU) रूप से मछली पकड़ना

जैसे कि समुद्री डकैती, आतंकवाद, तस्करी और जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव काफी नहीं थे, डब्ल्यूआईओ क्षेत्र आईयूयू रूप से मछली पकड़ने का शिकार भी है। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) के अनुसार, आईयूयू (IUU) रूप से मछली पकड़ना "एक व्यापक शब्द है जिसके अंतर्गत मछली पकड़ने की विस्तृत गतिविधियां शामिल हैं। आईयूयू (IUU) रूप से मछली पकड़ना मत्स्य ग्रहण के सभी प्रकार और आयामों में पाया जाता है; यह प्रचंड लहरों के साथ-साथ राष्ट्रीय अधिकार क्षेत्र के भीतर भी होता है।“ आईयूयू (IUU) रूप से मछली पकड़ना "मछली को पकड़ने और उसके उपयोग के सभी पहलुओं और चरणों से सम्बद्ध है, और कभी-

कभार यह संगठित अपराध से जुड़ा हो सकता है।"[109] हिंद महासागर में, आईयूयू (IUU) रूप से मछली पकड़ना विशेष रूप से तटीय समुदायों के साथ-साथ राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं के लिए एक बड़ा खतरा बन गया है। 2007 में, एफएओ ने उल्लेख किया कि, आईयूयू (IUU) रूप से मछली पकड़ने के संदर्भ में, "पश्चिमी हिंद महासागर और पूर्वी अफ्रीका के तट से लगे समुद्री क्षेत्र" "विशेष चिंता" के क्षेत्रों के रूप में उभरे हैं।[110] इस क्षेत्र में, "विभिन्न प्रकार के झंडे लगे मछली पकड़ने के जहाजों ने तटीय देशों में किसी मजबूत प्रवर्तन तंत्र के न होने का लाभ उठाया है।" 2017 में, यह अनुमान लगाया गया था कि आईयूयू (IUU) रूप से मछली पकड़ने के कारण डब्ल्यूआईओ राज्यों को सालाना 200-500 मिलियन अमेरिकी डॉलर का नुकसान होता है।[111]

चीन के मछली पकड़ने के बेड़े, जिनमें अनुमान के तौर पर 800,000 जहाज आते हैं, कथित तौर पर आईयूयू रूप से मछली पकड़ने की गतिविधियों में दुनिया का नेतृत्व कर रहे हैं। माना जाता है कि चीन की कम्युनिस्ट पार्टी आईयूयू रूप से मछली पकड़ने को प्रोत्साहित करती है और मछली पकड़ने के जहाजों और नावों को उदारता से राज्य सब्सिडी और इंसेंटिव देती है। नतीजतन, चीन के मछली पकड़ने के जहाज कथित तौर पर डब्ल्यूआईओ जैसे क्षेत्रों में आईयूयू रूप से मछली पकड़ने में लगे हुए हैं जो चीनी मुख्य भूमि से बहुत दूर हैं। 2020 में, अमेरिका ने आईयूयू रूप से मछली पकड़ने की चीनी हरकतों का संज्ञान लिया जिसके बाद चीन के खिलाफ कई नीतिगत कार्रवाई की गई। यूएस कोस्टगार्ड ने आईयूयू रूप से मछली पकड़ने को "अग्रणी वैश्विक समुद्री सुरक्षा खतरे" के रूप में घोषित किया है और ऐसी चीनी गतिविधियों को उजागर किया है जिनमें संप्रभुता और अंतर्राष्ट्रीय कानून के उल्लंघन शामिल हैं।[112] हालांकि, जब तक कि डब्ल्यूआईओ के तटीय देश अपने समुद्र तटों को सुरक्षित करने की क्षमता विकसित नहीं करते हैं, तब तक आईयूयू रूप से मछली पकड़ने को रोकना मुश्किल होगा।

XIII. डब्ल्यूआईओ में क्षेत्रीय संगठन

डब्ल्यूआईओ क्षेत्रीय प्रशासन की स्थापित संरचना का दावा करता है जो तटीय और गैर-तटीय खिलाड़ियों को समान मंच प्रदान करता है। ये संगठन सभी प्रमुख हितधारकों को अपनी चिंताओं और प्राथमिकताओं को सामने रखने का मौका देते हैं जिससे उन्हें आपसी मुद्दों पर सामूहिक कार्रवाई करने और सहयोग के लिए प्रेरणा मिलती है।

अफ्रीका और पश्चिम एशिया में ऐसे कई क्षेत्रीय संगठन हैं जो डब्ल्यूआईओ के कुछ राज्यों को कवर करते हैं। इनमें अफ्रीकी संघ (एयू), पूर्व एवं दक्षिणी अफ्रीका के लिए साझा बाजार (सीओएमईएसए), पूर्वी अफ्रीकी समुदाय (ईएसी), विकास पर अंतर-सरकारी प्राधिकरण (आईजीएडी), दक्षिणी अफ्रीकी विकास समुदाय (एसएडीसी), अरब लीग और गल्फ को-ऑपरेशन काउंसिल (जीसीसी) आदि शामिल हैं। अकेले हिंद महासागर में ही, ऐसी तीन प्रमुख क्षेत्रीय संरचनाएँ हैं, जो डब्ल्यूआईओ के कुछ हिस्से को कवर करती हैं, इनके नाम हैं- हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (आईओआरए), हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी (आईओएनएस) और हिंद महासागर आयोग (आईओसी)। हिंद महासागर के आर्थिक, कूटनीतिक और सुरक्षा मामलों में उनके महत्व के कारण, तीनों बड़ी परीक्षा से गुजरते हैं।

1. हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (आईओआरए)

आईओआरए एक अंतर-सरकारी क्षेत्रीय संघ है जो हिंद महासागर के मामलों को प्रभावित करने वाले मुद्दों पर चर्चा के लिए एक महत्वपूर्ण मंच है। इंडियन ओशन रीजन-एसोसिएशन फॉर रीजनल कोऑपरेशन (आईओआर-एआरसी)- 2013 में आईओआरए में बदल गया] मार्च 1997 में बना और इसका मुख्यालय मॉरीशस में है। हिंद महासागर रिम के देश आईओआरए की सदस्यता

के पात्र हैं और फरवरी 2021 तक, इसके 23 सदस्य-राज्य और 9 संवाद सहयोगी हैं।[vi] [113] यह संगठन अपने आप में अनूठा है क्योंकि यह एक साथ क्षेत्रीय और अंतर- क्षेत्रीय दोनों ही है। 'क्षेत्रीय' इस मायने में है कि यह एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र पर केंद्रित है और इसकी सदस्यता के लिए एक निर्धारित मानदंड है, जबकि यह 'अंतर-क्षेत्रीय' भी है क्योंकि इसके सदस्य राज्य उन भौगोलिक क्षेत्रों से आते हैं जो अपने अधिकार क्षेत्रों का निर्माण करते हैं (जैसे दक्षिणी अफ्रीका, दक्षिण-पूर्व एशिया आदि) और व्यापक हिंद महासागर क्षेत्र का हिस्सा हैं।

आईओआरए चार्टर बताता है कि, यह एसोसिएशन "सदस्य देशों की सरकारों, व्यवसायों और शिक्षाविदों के प्रतिनिधियों को एक साथ लाकर उनके आर्थिक सहयोग को और बढ़ावा देगा। बहुपक्षवाद की भावना के साथ, एसोसिएशन सहमति पर आधारित, विकासवादी और दखल नहीं देने वाले दृष्टिकोण के ज़रिये समझ और पारस्परिक रूप से लाभप्रद सहयोग का निर्माण और विस्तार करना चाहता है।“[114] इसके अलावा यह देखता है कि सहयोग "संप्रभु समानता, क्षेत्रीय अखंडता, राजनीतिक स्वतंत्रता, आंतरिक मामलों में गैर-हस्तक्षेप, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और आपसी लाभ" के सिद्धांतों के सम्मान पर आधारित होगा।“[115] आईओआरए एक सहमतिपूर्ण निर्णय लेने वाले मॉडल पर काम करता है और "उन द्विपक्षीय एवं अन्य मुद्दों पर रोक लगाता है, जिनके विवाद उत्पन्न करने और क्षेत्रीय सहयोग के प्रयासों में बाधा बनने की आशंका होती है"।[116] आईओआरए का उद्देश्य "क्षेत्र और सदस्य राज्यों की निरंतर प्रगति और संतुलित विकास को बढ़ावा देना और क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग के लिए सामान्य आधार तैयार करना है।“[117] इसके अलावा, आईओआरए "व्यापार एवं उद्योग, शैक्षणिक संस्थानों, विद्वानों और सदस्य राज्यों के

[vi] IORA members include - Australia, Bangladesh, the Comoros, India, Indonesia, Iran, Kenya, Madagascar, Malaysia, Maldives, Mauritius, Mozambique, Oman, Seychelles, Singapore, Somalia, South Africa, Sri Lanka, Tanzania, Thailand, the United Arab Emirates, Yemen and France
Dialogue partners of IORA are Egypt, China, US, UK, Germany, Italy, Turkey, Japan and South Korea.

लोगों के बीच बिना किसी भेदभाव के और अन्य क्षेत्रीय आर्थिक एवं व्यापार सहयोग व्यवस्थाओं के तहत किसी भी पूर्वाग्रह के बिना निकट संपर्क को प्रोत्साहित करना चाहता है"।[118]

अपनी शुरुआत से लेकर 2010 तक, आईओआरए अपेक्षाकृत अप्रभावी क्षेत्रीय संगठन बना रहा, क्योंकि हिंद महासागर में क्षेत्रवाद की अवधारणा को उतना ध्यान नहीं मिला, जितना चाहिए था। हालाँकि, 2011 के बाद से, आईओआरए ने पिछली बाधाओं को तोड़ना शुरू कर दिया और विश्व राजनीति में हिंद महासागर के बढ़ते महत्व तथा रिम देशों के बढ़ते भूराजनीतिक हितों के कारण एक महत्वपूर्ण क्षेत्रीय मंच के रूप में उभरा। भारत ने ऑस्ट्रेलिया के साथ मिलकर आईओआरए के मंच को पुनर्जीवित करने में सक्रिय रुचि ली। वास्तव में, आईओआरए के वेबसाइट में कहा गया है कि "जबसे भारत 2011-2013 की अवधि के लिए आईओआरए का अध्यक्ष बना है, आईओआरए के भीतर संस्थानों और क्षमताओं को मजबूत करने के लिए एक प्रगतिशील दिशा और दृढ़ संकल्प का निर्माण हुआ है।"[119] भारत की अध्यक्षता के दौरान, इसने संगठन को "पुनर्जीवित" किया और छह प्राथमिकता और दो फोकस क्षेत्रों को अपनाया जो इसकी गतिविधियों के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में कार्य करते हैं। ये थे: समुद्री रक्षा एवं सुरक्षा, व्यापार तथा निवेश की सुगमता, मत्स्य प्रबंधन, आपदा जोखिम प्रबंधन, सांस्कृतिक व पर्यटन आदान-प्रदान, शैक्षणिक, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, नीली अर्थव्यवस्था और महिला सशक्तीकरण।[120] जाहिर है, आईओआरए का ध्यान सामाजिक-आर्थिक विकास से संबंधित मुद्दों पर अधिक और हिंद महासागर की सुरक्षा समस्याओं के प्रबंधन पर कम है लेकिन यह मौजूदा भू-राजनीतिक तस्वीर को बदल सकता है। आईओआरए ने सोमालिया और यमन विकास कार्यक्रम (SYDP) तथा आईओआरए सतत विकास कार्यक्रम जैसी प्रमुख परियोजनाओं को शुरू किया है। इंडियन ओशन डायलॉग (IOD) आईओआरए का एक और प्रमुख कार्यक्रम है जो 2014 में शुरू हुआ था।[121] 2019 में, विश्व मामलों की भारतीय परिषद ने नई दिल्ली में आईओडी की मेजबानी की।[122]

भविष्य में, आईओआरए का महत्व और बढ़ना तय है। भारत आईओआरए को "वृहत अंतर-क्षेत्रीय साझेदारी के द्वारा इंडो-पैसिफिक में शांति, स्थिरता और समृद्धि को बढ़ावा देने के लिए एक मंच" मानता है।[123] यह हिंद महासागर के मामलों में भारत की अग्रणी भूमिका को स्वीकार करने और उसे प्रस्तुत करने के लिए भी एक उपयोगी माध्यम है। समान विचारधारा वाले अन्य देशों के साथ मिलकर भारत आचार संहिता विकसित करने और अधिक कनेक्टिविटी तथा क्षेत्र में बुनियादी ढाँचे के विकास पर जोर देने के लिए काम कर सकता है। वित्त पोषण में पारदर्शिता तथा अवसंरचना की गुणवत्ता जैसे मुद्दों को आईओआरए मंच पर भी उठाया जा सकता है क्योंकि इनके क्षेत्रीय राज्यों के विकास और, व्यापार तथा निवेश रणनीतियों के गंभीर निहितार्थ हैं।

यद्यपि, आईओआरए पश्चिमी हिंद महासागर में केंद्रित नहीं है, फिर भी डब्ल्यूआईओ के कई राज्य संगठन के सदस्य हैं। एसवाईडीपी जैसे कार्यक्रमों और नीली अर्थव्यवस्था तथा आपदा प्रबंधन जैसे फोकस क्षेत्रों के माध्यम से, आईओआरए डब्ल्यूआईओ की चिंताओं पर ध्यान दे रहा है। फ्रांस की सदस्यता (रीयूनियन द्वीप के ज़रिये) आईओआरए के भीतर डब्ल्यूआईओ के बढ़ते महत्व का सबसे ताजा उदाहरण है।[124] यह रिम देशों द्वारा फ्रांस को हिंद महासागर की शक्ति के रूप में स्वीकृति का संकेत देता है। इससे आईओआरए की क्षमता बढ़ने और संगठन के और मजबूत होने की संभावना है। यही वजह है कि, आईओआरए डब्ल्यूआईओ पर चर्चा में अधिक प्रासंगिक होता जा रहा है।

2. हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी (आईओएनएस)

आईओएनएस एक भारतीय पहल है और पश्चिमी प्रशांत नौसेना संगोष्ठी (डब्ल्यूपीएनएस) पर आधारित है। आईओएनएस, जो 2008 में शुरू हुआ था, “एक समावेशी और स्वैच्छिक पहल है जो

समुद्री सहयोग और क्षेत्रीय सुरक्षा को बढ़ाने के लिए हिंद महासागर क्षेत्र के समुद्री राज्यों की नौसेनाओं को एक साथ लाता है। यह चर्चा, नीति निर्माण के साथ-साथ नौसेना संचालन के कई पहलुओं के लिए एक मंच है, जो किसी सहकारी तंत्र के महत्वपूर्ण तत्व हैं।“[125] आईओएनएस को एक "अभूतपूर्व पहल" के रूप में माना जाता है जिसका “महत्व उल्लेखनीय रूप से बढ़ा है और जिसे हिंद महासागर क्षेत्र में पूरे दिल से स्वीकार किया गया है, इसने खुद को समुद्री सुरक्षा से संबंधित मुद्दों पर चर्चा और विचार-विमर्श के लिए एक प्रभावी मंच के रूप में स्थापित किया है।“[126] आईओएनएस में "24 सदस्य और 08 पर्यवेक्षक राष्ट्र शामिल हैं जिन्हें भौगोलिक रूप से चार उप-क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है, इनके नाम हैं दक्षिण-एशियाई, पश्चिम एशियाई, पूर्वी अफ्रीकी, दक्षिण-पूर्व एशियाई और ऑस्ट्रेलियाई समुद्र तटीय राज्य।“[127] इसने "समुद्री सुरक्षा, मानवीय सहायता एवं आपदा राहत (एचएडीआर) के साथ-साथ सूचना साझाकरण और अंतर-संचालन पर तीन कार्य समूह स्थापित किए हैं।"[128] वास्तव में, आईओएनएस ने एचएडीआर ऑपरेशन के लिए दिशा-निर्देश विकसित किए हैं।

आईओएनएस और डब्ल्यूपीएनएस की सदस्यता में ओवरलैप है, क्योंकि ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया, थाईलैंड और सिंगापुर जैसे राज्य दोनों के सदस्य हैं।[129] रॉयल ऑस्ट्रेलियाई नौसेना आईओएनएस को "हिंद महासागर क्षेत्र में प्रभावी समुद्री सुरक्षा संरचना के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण" मानती है और उसे यकीन है कि यह "हमारी सामूहिक समृद्धि के लिए मौलिक" है।[130] आईओएनएस की अध्यक्षता दो साल की होती है और अब तक, भारत (2008), यूएई (2010), दक्षिण अफ्रीका (2012), ऑस्ट्रेलिया (2014), बांग्लादेश (2016) और ईरान (2018) ने अध्यक्ष की कुर्सी संभाली है।[131] 2020 में, फ्रांस ने 2020-2022 की अवधि के लिए आईओएनएस की अध्यक्षता संभाली।[132] आईओआरए की तरह, आईओएनएस में फ्रांस की बढ़ती भूमिका हिंद महासागर की सुरक्षा और वास्तव में, अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा में डब्ल्यूआईओ के बढ़ते महत्व की एक स्पष्ट अभिव्यक्ति है।

आईओएनएस जैसी पहलें क्षेत्र में सहयोग के मानदंडों, व्यवहार के तरीकों और आदतों के निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाती हैं। वे विशिष्ट सेवाओं को एक साथ लाती हैं और अधिक से अधिक सहभागिता की सुविधा प्रदान करती हैं। भारत के लिए, आईओएनएस हिंद महासागर में इसकी प्रधानता दिखाने का एक महत्वपूर्ण साधन है। साथ ही, यह मौजूदा समुद्री साझेदारी को मजबूत करने तथा साझा सुरक्षा चिंताओं वाले राज्यों का एक समुदाय बनाने में मदद करता है। एक साथ मिलकर, आईओएनएस और आईओआरए हिंद महासागर के लिए एक समावेशी तथा क्षेत्र-व्यापी सुरक्षा और विकासात्मक संरचना प्रदान करते हैं।

3. हिंद महासागर आयोग (आईओसी)

दिलचस्प रूप से, आईओएनएस और आईओआरए दोनों पहलों की ताकत, डब्ल्यूआईओ के संदर्भ में उनकी प्राथमिक कमजोरी भी हैं। क्योंकि आईओएनएस और आईओआरए पूरे हिंद महासागर को कवर करते हैं, डब्ल्यूआईओ इन क्षेत्रीय संगठनों के लिए कई क्षेत्रों में से एक है। हालाँकि वे डब्ल्यूआईओ से संबंधित मुद्दों को कवर करते हैं और डब्ल्यूआईओ के कई राज्य इनके सदस्य हैं, लेकिन इन संगठनों के लिए विशेष रूप से डब्ल्यूआईओ पर ध्यान केंद्रित करना संभव नहीं है। इस संदर्भ में, आईओसी की भूमिका और महत्व को रेखांकित करने की आवश्यकता है। आईओसी का गठन 1982 में किया गया था और इसमें दक्षिण-पश्चिम हिंद महासागर शामिल है। इसके पांच सदस्य राज्य हैं- कोमोरोस, मेडागास्कर, मॉरीशस, सेशेल्स और रियूनियन आइलैंड (फ्रांस)। इन पाँचों देशों की भाषा एक ही है (फ्रांसीसी) तथा ये अपने इतिहास में कभी न कभी फ्रांसीसी उपनिवेशवाद से बंधे रहे हैं। आईओआरए की तरह, आईओसी का सचिवालय भी मॉरीशस में स्थित है। आईओसी एकमात्र क्षेत्रीय संगठन है, जो द्वीप राज्यों से मिलकर बना है और जो

"महाद्वीपीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर अपने सदस्य राज्यों की विशिष्टताओं का बचाव करता है।"[133]

आईओसी की फ्रांसीसी सदस्यता इसे समूह पर हावी होने की अनुमति देती है और खुद को हिंद महासागर 'की' शक्ति के रूप में स्थापित करती है, न कि केवल हिंद महासागर 'में' एक शक्ति के रूप में। इन वर्षों में, फ्रांस ने दक्षिण-पश्चिम हिंद महासागर में इसकी प्रधानता की रक्षा की है और आईओसी की सदस्यता ने क्षेत्र में फ्रांसीसी भूमिका और उपस्थिति को वैध बनाने में एक प्रमुख भूमिका निभाई है।[134] आईओआरए और आईओएनएस के उद्भव से पहले, आईओसी हिंद महासागर में एकमात्र क्षेत्रीय संगठन था और अब भी केवल यही विशेष रूप से पश्चिमी हिंद महासागर में स्थित संगठन है। पिछले कुछ वर्षों में, भारत-फ्रांस साझेदारी हिंद महासागर में मजबूत हुई है और इसके परिणामस्वरूप भारत आईओआरए की सदस्यता के लिए फ्रांस की बोली का समर्थन कर रहा है और आईओसी में पर्यवेक्षक बनने के लिए भारत के आवेदन का समर्थन फ्रांस कर रहा है।[135] भारत के अलावा, माल्टा, यूरोपीय संघ, चीन और इंटरनेशनल ऑर्गनाइजेशन ऑफ ला फ्रांसोफोनी (OIF) आईओसी के अन्य पर्यवेक्षक हैं। जैसे-जैसे डब्ल्यूआईओ की भू-राजनीति गरमा रही है, आईओसी की भूमिका और महत्वपूर्ण होती जा रही है।

हालांकि, यहाँ यह ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है कि संस्थानों का यह नेटवर्क एक एकीकृत भू-स्थैतिक और भू-आर्थिक स्थल के रूप में डब्ल्यूआईओ की कल्पना करने में विफल रहा है, और परिणामस्वरूप, कोई भी संस्था सभी डब्ल्यूआईओ राज्यों को एक ही छत के नीचे लाने में सक्षम नहीं हुई है। इसलिए, पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन की तरह, एक ऐसे मंच की आवश्यकता है जो पश्चिमी हिंद महासागर के तटवर्ती और द्वीपीय राज्यों को एक मंच पर साथ ला पाएगा।

XIV. उपसंहार

हिंद महासागर दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा महासागर है और यह 21वीं सदी की भू-राजनीति के केन्द्रीय मंच के रूप में उभरा है। यह विश्व का सबसे व्यस्त महासागर भी है जिसके एसएलओसी और चोक पॉइंट्स से विश्व का लगभग आधा व्यापार गुजरता है। यह ऊर्जा संसाधनों में बेहद समृद्ध है- 65% तेल और 35% गैस भंडार इस क्षेत्र में पाया जाता है जबकि दुनिया के 40% अपतटीय तेल का उत्पादन हिंद महासागर में किया जा रहा है। इस क्षेत्र में तेजी से उभर रहे आर्थिक, राजनीतिक और भूस्थैतिक मुद्दों के कारण यह एक महत्वपूर्ण रणनीतिक थिएटर के रूप में उभर रहा है।

इस पत्र ने हिन्द महासागर क्षेत्र के बढ़ते महत्व पर प्रकाश डाला लेकिन इसके भौगोलिक कवरेज को पश्चिमी हिंद महासागर तक सीमित रखा। पश्चिमी हिंद महासागर क्षेत्र की भू-राजनीति पर ध्यान आकर्षित करने और डब्ल्यूआईओ में प्रमुख एवं क्षेत्रीय शक्तियों के संबंधों का अवलोकन प्रस्तुत करने तथा क्षेत्र में उनकी दीर्घकालिक प्राथमिकताओं और उपस्थिति को उजागर करने का भी प्रयास किया गया है। इस पत्र के माध्यम से दो व्यापक विषय चलते हैं: प्रमुख शक्तियों के बीच प्रतिद्वंद्विता और डब्ल्यूआईओ की अवस्थिति का रणनीतिक महत्व। इन दोनों विषयों के संदर्भ में, पत्र ने सैन्य उपस्थिति पर विचार किया जिसमें प्रमुख शक्तियां, डब्ल्यूआईओ के सामने आ रहीं गैर-पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियां तथा प्रमुख क्षेत्रीय संगठन शामिल हैं। यह पत्र डब्ल्यूआईओ की परत-दर-परत खुलती भू-राजनीति को भारतीय दृष्टिकोण से देखता है और भारत की विदेश नीति एवं राष्ट्रीय सुरक्षा में क्षेत्रीय भू-राजनीति के निहितार्थों को सामने लाने में रुचि रखता है। पत्र भारत को डब्ल्यूआईओ में एक प्रमुख हितधारक मानता है, डब्ल्यूआईओ

भारत की समुद्री सजगता में एक महत्वपूर्ण घटक है, और इसलिए यह डब्ल्यूआईओ के भूगोल को फिर से परिभाषित करता है।

भू-रणनीतिक रूप से, डब्ल्यूआईओ कई प्रमुख शक्तियों (जैसे अमेरिका, फ्रांस, चीन, रूस) के लिए एक मीटिंग पॉइंट है जो इस क्षेत्र में अपनी सैन्य उपस्थिति का विस्तार करने और अपने संबंधित प्रभावों को ठोस बनाने के लिए उत्सुक हैं। पारंपरिक और गैर-पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियों में संक्रमण तथा समुद्री सुरक्षा, समुद्री डकैती, आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, और शासन की चुनौतियों से संबंधित मुद्दों ने एक जटिल भू-राजनीतिक जाल का निर्माण किया है जहां क्षेत्रीय और अतिरिक्त-क्षेत्रीय अभिनेताओं के हित और उद्देश्य समान होते जा रहे हैं। इसने क्षेत्र में अपने प्रभाव और प्रासंगिकता का विस्तार करने के लिए आपस में प्रतिस्पर्द्धा कर रहे अभिनेताओं के लिए डब्ल्यूआईओ को भविष्य के सत्ता संघर्ष का हॉटस्पॉट बना दिया है। इस प्रकार, प्रमुख शक्तियों की उभरती हुई गतिकी को देखते हुए, डब्ल्यूआईओ में क्षेत्रीय शक्तियों की भूमिका को देखना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

यह क्षेत्र भारत की गतिविधियों के साथ-साथ पश्चिम एशियाई देशों के लिए भी एक महत्वपूर्ण थिएटर के रूप में उभरा है। भारत के लिए डब्ल्यूआईओ महत्वपूर्ण है, न केवल अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की सुविधा के लिए एसएलओसी पर इसकी निर्भरता के कारण बल्कि इसलिए भी क्योंकि भारत इस क्षेत्र के कई तटवर्ती राज्यों के लिए एक महत्वपूर्ण राजनीतिक-सैन्य साझेदार बन कर सामने आया है। इसने खुद को इन राज्यों के लिए "पसंदीदा सुरक्षा भागीदार" के रूप में पेश किया है और इनकी आर्थिक एवं सुरक्षा क्षमताओं के निर्माण में उनकी मदद कर रहा है। भारतीय नौसेना क्षेत्र में व्यापक एचएडीआर गतिविधियों का संचालन करने में लगी हुई है और पोर्ट-कॉल, अभ्यास, अच्छी प्रथाओं के आदान-प्रदान और क्षमता निर्माण के माध्यम से अपनी सक्रिय रक्षा कूटनीति के साथ अपने प्रोफ़ाइल का विस्तार किया है।

पश्चिम एशियाई राज्यों की व्यस्तता और रुचि का विश्लेषण करते हुए, पत्र ने गठबंधनों और जवाबी गठबंधनों के जटिल ताने-बाने पर प्रकाश डाला जो क्षेत्र में विकास को प्रभावित कर रहे हैं। पश्चिम एशियाई राज्यों में सऊदी अरब, तुर्की, यूएई और कतर ने इस क्षेत्र में काफी रुचि दिखाई है। इन शक्तियों के विकास और कार्यकलापों, जिन पर पत्र में चर्चा की गई है, में क्षेत्र की भू-राजनीति को और जटिल बनाने की क्षमता है। अपने प्रभाव को बढ़ाने तथा सामरिक हितों की रक्षा करने के प्रयासों के द्वारा वे ऐसा कर सकते हैं।

इस क्षेत्र में विभिन्न हितधारकों की बढ़ रही गतिविधियों के कारण जहाँ यह भू-राजनीतिक और भू-सामरिक हॉटस्पॉट बनता जा रहा है, वहीं इस क्षेत्र की गतिकी को आकार देने में गैर-पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियों की भूमिका की अनदेखी नहीं की जा सकती है। चूंकि यह क्षेत्र दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण एसएलओसी की मेजबानी करता है, इसलिए यह समुद्री डकैती, आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, आईयूयू रूप से मछली पकड़ने आदि जैसी विभिन्न चुनौतियों के लिए असुरक्षित बन गया है। इन गैर-पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियों ने दोहरी भूमिका निभाई है- पहला, उन्होंने इन अतिरिक्त-क्षेत्रीय राज्यों में से कई को इस क्षेत्र में लाने के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। और दूसरा, इन शक्तियों ने क्षेत्र में अपनी भागीदारी को जारी रखने और अपनी उपस्थिति को मजबूत बनाए रखने के लिए इन चुनौतियों का उपयोग किया है।

डब्ल्यूआईओ में क्षेत्रीय संगठन भी क्षेत्रीय प्रशासन संरचना में एक महत्वपूर्ण कड़ी बनकर उभरे हैं। इन संगठनों ने विभिन्न क्षेत्रीय और गैर-क्षेत्रीय खिलाड़ियों को इस क्षेत्र को प्रभावित करने वाले मुद्दों पर सहयोग के लिए एक मंच दिया है। इन संगठनों के महत्व को प्रधानमंत्री मोदी ने शांगरी-ला संवाद में अपने भाषण के दौरान भी उजागर किया था, जब उन्होंने कहा था, "हिंद महासागर क्षेत्र में, हमारे रिश्ते मजबूत हो रहे हैं... हम हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी (आईओएनएस) जैसे मंचों के माध्यम से सामूहिक सुरक्षा को बढ़ावा देते हैं)। हम हिंद महासागर

रिम एसोसिएशन (आईओआरए) के माध्यम से क्षेत्रीय सहयोग के व्यापक एजेंडे को आगे बढ़ा रहे हैं। और, हम यह सुनिश्चित करने के लिए कि वैश्विक पारगमन मार्ग शांतिपूर्ण और सभी के लिए स्वतंत्र रहें, हिंद महासागर क्षेत्र से परे भी भागीदारों के साथ काम करते हैं।" इस क्षेत्र को परिभाषित करने वाली गहन विविधताओं और जटिल उप-क्षेत्रीय सुरक्षा चुनौतियों के साथ, ये संगठन हिंद महासागर आयोग के साथ मिलकर डब्ल्यूआईओ में बातचीत, सहयोग और समुद्री सुरक्षा को आगे बढ़ाने के लिए बहुपक्षीय जुड़ाव के अवसर प्रदान करते हैं।

संक्षेप में, क्षेत्रीय और प्रमुख शक्तियों के संगम के लिए एक भू-राजनीतिक स्थल के रूप में पश्चिमी हिंद महासागर का उदय होना स्पष्ट है। इन खिलाड़ियों की गतिविधियां और दीर्घकालिक प्राथमिकताएं 21वीं सदी की रणनीतिक वास्तविकता को परिभाषित कर रही हैं। डब्ल्यूआईओ भारत के लिए इस क्षेत्र में दो तरह से अपनी भागीदारी का लाभ उठाने के लिए अपार अवसर प्रस्तुत करता है- पहला, यह भारत को क्षेत्र में तटवर्ती राज्यों और द्वीपों के साथ मिलकर विकास, आर्थिक और सुरक्षा सहयोग के माध्यम से अपनी रणनीतिक उपस्थिति का विस्तार करने की अनुमति देता है। और दूसरा, यह क्षेत्र में मौजूद प्रमुख शक्तियों के साथ सहयोग कर अपनी क्षमताओं की कमी को दूर कर सकता है और डब्ल्यूआईओ की गतिशीलता को आकार देने में बड़ी भूमिका निभा सकता है। भारत के लिए, डब्ल्यूआईओ रणनीतिक हितों का एक महत्वपूर्ण थिएटर बना हुआ है जो इसे अपनी वैश्विक भूमिका को और बड़ा करने में मदद करेगा।

XV. अभिस्वीकृति

लेखकद्वय डॉ. टीसीए राघवन, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए द्वारा प्रदान किए गए मार्गदर्शन और इस पत्र के कई मसौदों पर उनकी गहरी रुचि और अनुभवजन्य टिप्पणियों पर धन्यवाद देना चाहते हैं। आईसीडब्ल्यूए की संयुक्त सचिव सुश्री नूतन कपूर-महावर एवं आईसीडब्ल्यूए की निदेशक अनुसंधान डॉ. निवेदिता राय ने इस पत्र के हर कदम पर हमारी मदद की और मार्गदर्शन किया। हम इन तीनों द्वारा प्रदान किए गए समर्थन और प्रेरणा के लिए आभारी हैं।

आईसीडब्ल्यूए के भीतर, हमारे सहयोगियों डॉ. संजीव कुमार, डॉ.स्तुति बनर्जी, डॉ. चंद्र रेखा, डॉ. विवेक मिश्रा और डॉ. प्रज्ञा पांडे ने पत्र के हिस्सों को पढ़ा और हमें बहुमूल्य सुझाव दिए। उनके सुझावों ने निश्चित रूप से मसौदा तैयार करने में हमारी मदद की है।

और अंत में, हम अपने कर्तव्य में असफल रहेंगे, यदि हमने डॉ. विजय सखूजा, सलाहकार, आईसीडब्ल्यूए और प्रो. संजय चतुर्वेदी, प्रोफेसर व डीन, सामाजिक विज्ञान संकाय, अंतर्राष्ट्रीय संबंध विभाग, दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय, को धन्यवाद ज्ञापन नहीं किया तो। ड्राफ्ट पेपर पर उनकी टिप्पणियों और विवरण पर उनकी दृष्टि ने हमें इस पत्र को और अधिक संपूर्ण बनाने के लिए दिलचस्प सुझाव और शोध के क्षेत्र प्रदान किए। हम उनके आभारी हैं।

XVI. और पढ़ें

1. Dennis Rumley, Timothy Doyle & Sanjay Chaturvedi, "Securing' the Indian Ocean? Competing regional security constructions", *Journal of the Indian Ocean Region*, 8 (1), 2012, pp.1-20.

2. BertilLintner, The Costliest Pearl: China's Struggle for India's Ocean, Context, Chennai, 2019

3. David H. Shinn, "China's Power Projection in the Western Indian Ocean", *China Brief*, 17 (6), 2017, pp. 4-8.

4. Jérôme Henry, "China's Military Deployments in the Gulf of Aden: Anti-Piracy and Beyond", *Institutfrançais des relations internationals (IFRI),* Asie. Visions 89, Paris, November 2016.

5. Gabe Collins and Andrew S. Erickson, "Implications of China's military Evacuation of Citizens from Libya", *China Brief*, 11 (4), 2011, pp. 8-10.

6. Michael J. Green and Andrew Shearer, "Defining U.S. Indian Ocean Strategy", *The Washington Quarterly*, 35 (2), 2012, pp. 175-189.

7. Agathe Maupin, "France in the Indian Ocean: A Geopolitical Perspective and its Implications for Africa", Policy Insights, 42, *South African Institute of International Affairs*, Johannesburg, March 2017.

8. ZorawarDaulet Singh, "Foreign Policy and Sea Power: India's Maritime Role Flux", *Journal of Defence Studies*, 11 (4), 2017, pp. 21-49.

9. Sankalp Gurjar, "Geopolitics of the Western Indian Ocean: Unravelling China's Multi-dimensional Presence", *Strategic Analysis*, 43 (5), 2019, pp. 385 – 401

10. G.V.C. Naidu, "India, Africa and the Indian Ocean", *Journal of the Indian Ocean Region*, 9 (2), 2013, pp. 189-207

11. Dr. Arndt Michael, "India and the EU in the Indian Ocean Maritime Security as Catalyst for Cooperation", FEPS Policy Brief, *Foundation for European Progressive Studies*, 2016

12. Matthew Funaiole and Jonathan Hillman, "China's Maritime Silk Road Initiative: Economic Drivers and Challenges", in Nicholas Szechenyi (ed.), *China's Maritime Silk Road: Strategic and Economic Implications for the Indo-Pacific Region*, Centre for Strategic and International Studies, March 2018

13. Europe in the Indo-Pacific: Moving from Periphery to the Centre?, South Asia Discussion Papers, *Institute of South Asian Studies*, September 2019,Singapore

14. Nicola Casarini, Maritime Security and Freedom of Navigation from the South China Sea and Indian Ocean to the Mediterranean: Potential and Limits of EU-India Cooperation, IAI Working Papers 16-37,*IstitutoAffariInternazionali*, December 2016

15. Jay Maniyar (2020) Japan in the Indian Ocean: An integral and holistic involvement in South Asia, *Maritime Affairs: Journal of the National Maritime Foundation of India*, 16(1), pp. 98-109

16. ArzanTarapore (2020) Building Strategic Leverage in the Indian Ocean Region, *The Washington Quarterly*, 43(4), pp.207-237

17. Deepak Singhal, Cooperative Mechanisms to Address Non-Traditional Maritime Security Threats in the Indian Ocean Region (IOR), *Naval War College Journal*, pp. 151-161

XVII. संदर्भ

[1]Robert D Kaplan wrote a famous book and subsequently a *Foreign Affairs* article explaining why Indian Ocean is achieving Center-Stage in 21st century international politics. See: Robert D. Kaplan, Monsoon: The Indian Ocean and the Future of American Power, Random House, New York, 2011.

[2] Peter Woodward, *The Horn of Africa: State, politics and international relations*, I.B. Tauris Publishers, New York, 2002, pp. 14-18

[3]Ibid, pp. 136 -150

[4]Abdi Latif Dahir, "How a tiny African country became world's key military base", *Quartz Africa*, August 18, 2017, available at: https://qz.com/africa/1056257/how-a-tiny-african-country-became-the-worlds-key-military-base/(Accessed on December 31, 2020)

[5]Sankalp Gurjar, "Growing Strategic Significance of Western Indian Ocean",*Deccan Herald*, December 9, 2020, available at: https://www.deccanherald.com/opinion/comment/growing-significance-of-western-indian-ocean-region-925393.html?fbclid=IwAR3GH7E84QX8evFlCzAno4T6pTZJcBEcl3ujQ9JO9-q0ZsPDt8cLKl4uFCk(Accessed on December 31, 2020)

[6] Zach Vertin, "Red Sea Rivalries: The Gulf, the Horn and the New Geopolitics of the Red Sea", *Brookings Institution*, June 2019, available at: https://www.brookings.edu/wp-content/uploads/2019/06/Red-Sea-Rivalries.-The-Gulf-The-Horn-and-the-New-Geopolitics-of-the-Red-Sea-English-pdf.pdf (Accessed on December 31, 2020)

[7] US Department of Defense, "Combatant Commands (Centcom)", 2020, available at: https://www.centcom.mil/AREA-OF-RESPONSIBILITY/ (Accessed on December 31, 2020) and US Department of Defense, "Combatant Commands (Africom)", 2020, available at: https://www.africom.mil/military-presence (Accessed on December 31, 2020)

[8] Michael R Gordon, "U.S. turns Horn of Africa Into a Military Hub", *The New York Times*, November 17, 2002

[9] Neil Melvin, "The Foreign Military Presence in the Horn of Africa Region", *SIPRI Background Paper*, April 2019, available at: https://www.sipri.org/sites/default/files/2019-05/sipribp1904_2.pdf (Accessed on January 1, 2021)

[10] Monte Reel, "Djibouti is Hot", *Bloomberg Businessweek*, March 26, 2016, available at: https://www.bloomberg.com/features/2016-djibouti/#:~:text=How%20a%20forgotten%20sandlot%20of,hub%20of%20international%20power%20games.&text=The%20bartender%20measures%20a%20shot,and%20dumps%20it%20over%20ice (Accessed on January 1, 2021)

[11] Craig Whitlock, "Remote U.S. base at core of secret operations", *The Washington Post*, October 25, 2012

[12] Ibid, Also see: Eric Schmitt and Abdi Latif Dahir, "Al Qaeda Branch in Somalia Threatens Americans in East Africa — and Even the U.S.", The New York Times, March 21, 2020

[13]For a complete list of participating countries, see: *Combined Maritime Forces*, "Who We Are", 2021, available at: https://combinedmaritimeforces.com/ (Accessed on February 24, 2021)

[14] Matthew R MacLeod and William M Wardrop, "Operational Analysis at Combined Maritime Forces", July 2015, available at: https://cradpdf.drdc-rddc.gc.ca/PDFS/unc201/p802529_A1b.pdf (Accessed on January 1, 2021)

[15]Ibid

[16] Neil Melvin, "The Foreign Military Presence in the Horn of Africa Region", *SIPRI Background Paper*, April 2019, available at: https://www.sipri.org/sites/default/files/2019-05/sipribp1904_2.pdf (Accessed on January 1, 2021)

[17] Sankalp Gurjar, "Growing Strategic Significance of Western Indian Ocean", *Deccan Herald*, December 9, 2020, available at: https://www.deccanherald.com/opinion/comment/growing-significance-of-western-indian-ocean-region-925393.html?fbclid=IwAR3GH7E84QX8evFlCzAno4T6pTZJcBEcl3ujQ9JO9-q0ZsPDt8cLKl4uFCk (Accessed on December 31, 2020)

[18] Nick Turse, "The US Military's Best-Kept Secret", *The Nation*, November 17, 2015, available at: https://www.thenation.com/article/archive/the-us-militarys-best-kept-secret/ (Accessed on January 1, 2021)

[19] Reuters, "Factbox: US forces in Gulf region and Iraq", January 8, 2020, available at: https://www.reuters.com/article/us-iraq-security-usa-presence-factbox-idUSKBN1Z72GF (Accessed on January 1, 2021)

[20] Neil Melvin, "The Foreign Military Presence in the Horn of Africa Region", *SIPRI Background Paper*, April 2019, available at: https://www.sipri.org/sites/default/files/2019-05/sipribp1904_2.pdf (Accessed on January 1, 2021)

[21] Alex Martin, "First Overseas military base since WWII to open in Djibouti" *Japan Times*, July 2, 2011, available at: https://www.japantimes.co.jp/news/2011/07/02/national/first-overseas-military-base-since-wwii-to-open-in-djibouti/ (Accessed on January 1, 2021)

[22] US Energy Information Administration, "Japan", November 2, 2020, available at: https://www.eia.gov/international/analysis/country/JPN (Accessed on January 1, 2021)

[23] Neil Melvin, "The Foreign Military Presence in the Horn of Africa Region", *SIPRI Background Paper*, April 2019, available at: https://www.sipri.org/sites/default/files/2019-05/sipribp1904_2.pdf (Accessed on January 1, 2021)

[24] Kingsley Ighobor, "Boost in Japan-Africa ties", *Africa Renewal*, April 2016, available at: https://www.un.org/africarenewal/magazine/april-2016/boost-japan-africa-ties (Accessed on January 1, 2021)

[25] Ministry of Foreign Affairs of Japan, "Foreign Minister Motegi visits Tunisia, Mozambique, South Africa and Mauritius", December 13, 2021, available at: https://www.mofa.go.jp/afr/af2/page3e_001086.html (Accessed on January 1, 2021)

[26]Anita Prakash, "The Asia-Africa Growh Corridor: Bringing together old partnerships and new infinitives" *ORF Issue Brief*, April 25, 2018, available at: https://www.orfonline.org/research/the-asia-africa-growth-corridor-bringing-together-old-partnerships-and-new-initiatives/ (Accessed on January 1, 2021)

[27] Dipanjan Roy Chaudhury, "Indo-Japan Mutual Logistics Pact can enable Navies access to Djibouti & Andamans", *The Economic Times*, August 27, 2020, available at: https://economictimes.indiatimes.com/news/defence/indo-japan-mutual-logistics-pact-can-enable-navies-access-to-djibouti-andamans/articleshow/77787795.cms?from=mdr#:~:text=The%20ACSA%20(commonly%20referred%20to,Islands%2C%20ET%20has%20reliably%20gathered. (Accessed on February 17, 2021)

[28] Neil Melvin, "The Foreign Military Presence in the Horn of Africa Region", *SIPRI Background Paper*, April 2019, available at: https://www.sipri.org/sites/default/files/2019-05/sipribp1904_2.pdf (Accessed on January 1, 2021)

[29]China-Africa Research Initiative, "Data: China-Africa Trade", 2020, available at: http://www.sais-cari.org/data-china-africa-trade#:~:text=The%20value%20of%20China%2DAfrica,by%20South%20Africa%20and%20Egypt. (Accessed on February 24, 2021)

[30]Sankalp Gurjar, "Geopolitics of the Western Indian Ocean: Unravelling China's Multi-Dimensional Presence", *Strategic Analysis*, 43(5), 2019, pp. 385-401

[31] Andrew Erickson and Austin Strange, "China's Global Military Presence: Hard and Soft Dimensions of PLAN Antipiracy Operations", *China Brief*, 15(9), 2015, pp. 3-7

[32] Sankalp Gurjar, "Geopolitics of the Western Indian Ocean: Unravelling China's Multi-Dimensional Presence", *Strategic Analysis*, 43(5), 2019, pp. 385-401

[33]Neil Melvin, "The Foreign Military Presence in the Horn of Africa Region", *SIPRI Background Paper*, April 2019, available at: https://www.sipri.org/sites/default/files/2019-05/sipribp1904_2.pdf (Accessed on January 1, 2021)

[34] Minnie Chan, "First Djibouti… now Pakistan port earmarked for a Chinese overseas naval base, sources say", *South China Morning Post*, January 2018, available at: https://www.scmp.com/news/china/diplomacy-defence/article/2127040/first-djibouti-now-pakistan-port-earmarked-chinese (Accessed on January 2, 2021)

[35] Reuters, "China to reopen Somalia embassy, see strong ties", June 30, 2014, available at: https://in.reuters.com/article/us-china-somalia/china-to-reopen-somalia-embassy-sees-strong-ties-idUSKBN0F50V920140630 (Accessed on January 2, 2021)

[36]Oriana Skylar Mastro, "Russia and China team up in the Indian Ocean", *The Interpreter*, December 16, 2020, available at: https://www.lowyinstitute.org/the-interpreter/russia-and-china-team-indian-ocean (Accessed on January 2, 2021)

[37] Roman Goncharenko, "With Sudan naval base, Russia may have a 'Key to Africa', *Deutsche Welle*, December 12, 2020, available at: https://www.dw.com/en/with-sudan-naval-base-russia-may-have-a-key-to-africa/a-55791124 (Accessed on January 2, 2021)

[38] Samuel Ramani, "Russia's Port Sudan Naval Base: A Power Play on the Red Sea", *RUSI Commentary*, December 7, 2020, available at: https://rusi.org/commentary/russia-port-sudan-naval-base-power-play-red-sea (Accessed on January 2, 2021)

[39]Stephen Blank, "Russia's New Maritime Doctrine", *Jamestown Foundation*, August 11, 2015, available at: https://jamestown.org/program/russias-new-maritime-doctrine/ (Accessed on February 17, 2021)

[40] Russia Maritime Studies Institute, "The 2015 Maritime Doctrine of the Russian Federation", 2015, *RMSI Research*, available at: https://digital-commons.usnwc.edu/cgi/viewcontent.cgi?article=1002&context=rmsi_research (Accessed on February 17, 2021)

[41]Ibid

[42] Roman Goncharenko, "With Sudan naval base, Russia may have a 'Key to Africa', *Deutsche Welle*, December 12, 2020, available at: https://www.dw.com/en/with-sudan-naval-base-russia-may-have-a-key-to-africa/a-55791124 (Accessed on January 2, 2021)

[43] HHS Viswanathan, "Russia makes a comeback in Africa: First Russia-Africa summit in Sochi", *ORFRaisina Debates*, November 7, 2019, available at: https://www.orfonline.org/expert-speak/russia-makes-a-comeback-in-africa-first-russia-africa-summit-in-sochi-57386/ (Accessed on January 2, 2021)

[44] OrianaPawlyk, “Russian Bombers to land in South Africa during Unprecedented Deployment”, October 21, 2019, available at: https://www.military.com/daily-news/2019/10/21/russian-bombers-land-south-africa-during-unprecedented-deployment.html (Accessed on January 2, 2021)

[45] Sergey Sukhankin, “ The ‘Hybrid’ Role of Russian Mercenaries, PMCs and Irregulars in Moscow’s Scramble for Africa”, *The Jamestown Foundation*, January 10, 2020, available at: https://jamestown.org/program/the-hybrid-role-of-russian-mercenaries-pmcs-and-irregulars-in-moscows-scramble-for-africa/ (Accessed on January 2, 2021)

[46] Maritime Security Strategy, The Indian Navy, 2015, https://www.indiannavy.nic.in/sites/default/files/Indian_Maritime_Security_Strategy_Document_25Jan16.pdf#page=25, Accessed on January 2, 2021

[47] Ibid.

[48] Hindustan Times, 3 February 2021, https://www.hindustantimes.com/india-news/india-can-act-as-net-security-provider-in-indian-ocean-region-defence-minister-101612365053505.html, Accessed on 22 February 2021

[49] Ministry of Defence, https://www.mod.gov.in/dod/faq?page=1, Accessed on January 2, 2021

[50] Ministry of External Affairs, Prime Minister’s Keynote Address at Shangri La Dialogue, 1 June 2018, https://www.mea.gov.in/Speeches-Statements.htm?dtl/29943/Prime+Ministers+Keynote+Address+at+Shangri+La+Dialogue+June+01+2018, Accessed on 21 February 2021

[51] *The Hindu*, 28 July 2019, https://www.thehindu.com/news/national/three-military-logistics-support-agreements-on-the-anvil/article28734687.ece, Accessed on January 2, 2021

[52] Information Fusion Centre – Indian Ocean Region, Indian Navy, https://www.indiannavy.nic.in/ifc-ior/about-us.html, Accessed on January 2, 2021

[53] The Hindu, 6 October 2019, https://www.thehindu.com/news/national/india-starts-sharing-maritime-data/article29611936.ece, Accessed on January 2, 2021

[54] Ministry of External Affairs, Government of India, Prime Minister's Remarks at the Commissioning of Offshore Patrol Vessel (OPV) Barracuda in Mauritius (March 12, 2015), http://www.mea.gov.in/SpeechesStatements.htm?dtl/24912/Prime_Ministers_Remarks_at_the_Commissioning_of_Offshore_Patrol _Vessel_OPV_Barracuda_in_Mauritius_March_12_2015, Accessed on 16 February 2021

[55] Mission Sagar III - INS Kiltan Arrives at Sihanoukville, Cambodia, 29 December 2020, Indian Navy, https://www.indiannavy.nic.in/content/mission-sagar-iii-ins-kiltan-arrives-sihanoukville-cambodia-0#:~:text=This%20Mission%20is%20being%20undertaken,Security%20Partner%20and%20First%20Responder, Accessed on 16 February 2021

[56] Mission Sagar - 10 May 2020, Indian Navy, https://www.indiannavy.nic.in/node/26236, Accessed on 16 February 2021

[57] Mission Sagar– II, 6 November 2020, PIB, Government of India, https://pib.gov.in/Pressreleaseshare.aspx?PRID=1670740, Accessed on 16 February 2021

[58] Mission Sagar III – INS Kiltan Arrives at Ho Chi Minh City, 24 December 2020, Indian Navy, https://www.indiannavy.nic.in/content/mission-sagar-iii-%E2%80%93-ins-kiltan-arrives-ho-chi-minh-city, Accessed on 16 February 2021

[59] ‘Phone call between External Affairs Minister and Foreign Minister of Madagascar’, Ministry of External Affairs, 1 March 2021, Government of India, https://mea.gov.in/press-releases.htm?dtl/33578/Phone_call_between_External_Affairs_Minister_and_Foreign_Minister_of_Madagascar, Accessed on 10 March 2021

[60]Sibal, K. (28 May 2018), "India's maritime and other challenges in the Indo-Pacific region", Indian Defence Review, Retrieved November20, 2020, from http://www.indiandefencereview.com/spotlights/indias-maritime-and-other-challenges-in-the-indo-pacific-region/0/, Accessed on January 3, 2021

[61] 'Enhancing Security Cooperation in and with Asia,' Factsheet, EEAS, 2019, https://eeas.europa.eu/sites/eeas/files/factsheet_eu_asia_security_july_2019.pdf, Accessed on January 3, 2021

[62] European Commission, "Maritime Security Strategy," http://ec.europa.eu/maritimeaffairs/policy/maritime-security_en, Accessed on January 3, 2021

[63] Commodore Somen Banerjee, "Emerging India European Union Cooperation in Western Indian Ocean", Vivekananda International Foundation, January 2018, https://www.vifindia.org/print/4362, Accessed on January 3, 2021

[64] 'CMR Wider Indian Ocean', CRIMARIO, https://criticalmaritimeroutes.eu/projects/crimario/, Accessed on January 3, 2021

[65] 'Maritime Security: The EU CRIMARIO Initiative is Starting', 11 June 2020, CRIMARIO, https://www.crimario.eu/en/2020/06/11/maritime-security-eu-crimario-initiative-starting/, Accessed on January 3, 2021

[66] Isabelle Gachie Vinson, "CRIMARIO-MASE: A Win-Win Partnership", CRIMARIO, 2018, https://www.crimario.eu/en/2018/10/04/crimario-mase-a-win-win-partnership/, Accessed on January 3, 2021

[67] Isabelle Saint-Mézard, "The French Strategy in the Indian Ocean and the Potential for Indo-French Cooperation", Policy Report, S. Rajaratnam School of International Studies, March 2015

[68] France24, 26 May 2009, https://www.france24.com/en/20090526-sarkozy-opens-french-military-base-abu-dhabi-, Accessed on January 4, 2021

[69] Report on Charting Global Transitions, Institute of Peace and Conflict Studies, 2015, https://www.jstor.org/stable/pdf/resrep09385.8.pdf?refreqid=excelsior%3Ad20d856daf3219a7fd0c2ff12e2bd78c, Accessed on January 4, 2021

[70] France: A Pioneer in the Global Fight against Piracy, Ministry of European and Foreign Affairs, Government of France, https://www.diplomatie.gouv.fr/en/french-foreign-policy/security-disarmament-and-non-proliferation/fight-against-organized-criminality/piracy-on-the-high-seas/, Accessed on January 4, 2021

[71]Lee Cordner (2018), '*Maritime Security Risks, Vulnerabilities and Cooperation: Uncertainty in the Indian Ocean*', (Australia: Palgrave Macmillan)

[72]Rear Adm. (Ret.) Michael Mcdevitt, 'America's Interest in Diego Garcia', Commentary, War on the Rocks, 3 June 2020, https://warontherocks.com/2020/06/americas-interest-in-diego-garcia/, Accessed on 17 February 2021

[73]*BBC*, 22 November 2019, https://www.bbc.com/news/uk-50511847, Accessed on January 4, 2021

[74]General Assembly Welcomes International Court of Justice Opinion on Chagos Archipelago, Adopts Text Calling for Mauritius' Complete Decolonization, United Nations, 22 May 2019, https://www.un.org/press/en/2019/ga12146.doc.htm, Accessed on 15 February 2021

[75] BBC, 28 January 2021, https://www.bbc.com/news/world-africa-55848126, Accessed on 15 February 2021

[76]Ibid

[77] Operation Kipion, British Royal Navy, https://www.royalnavy.mod.uk/news-and-latest-activity/operations/red-sea-and-gulf/operation-kipion, Accessed on January 4, 2021

[78] Independent, 6 April 2018, https://www.independent.co.uk/news/uk/home-news/uk-bahrain-military-base-juffair-royal-navy-mina-salman-middle-east-hms-queen-elizabeth-a8291486.html, Accessed on January 4, 2021

[79] David Scott (2018) Britain Returns to the Indian Ocean?, *The Round Table*, 107(3), pp. 307-316

[80] UK and Oman sign historic Joint Defence Agreement, Government of UK, 21 February 2019, https://www.gov.uk/government/news/uk-and-oman-sign-historic-joint-defence-agreement, Accessed on January 4, 2021

[81] Zach Vertin, "Red Sea Rivalries: The Gulf, the Horn and the New Geopolitics of the Red Sea", *Brookings Institution*, June 2019, available at: https://www.brookings.edu/wp-content/uploads/2019/06/Red-Sea-Rivalries.-The-Gulf-The-Horn-and-the-New-Geopolitics-of-the-Red-Sea-English-pdf.pdf(Accessed on December 31, 2020)

[82]Ibid

[83] Alex de Waal, "Beyond the Red Sea: A new driving force in the politics of the Horn", *African Arguments*, July 11, 2018, available at: https://africanarguments.org/2018/07/beyond-red-sea-new-driving-force-politics-horn-africa/ (Accessed on February 16, 2021)

[84] Zach Vertin, "Red Sea Rivalries: The Gulf, the Horn and the New Geopolitics of the Red Sea", *Brookings Institution*, June 2019, available at: https://www.brookings.edu/wp-content/uploads/2019/06/Red-Sea-Rivalries.-The-Gulf-The-Horn-and-the-New-Geopolitics-of-the-Red-Sea-English-pdf.pdf (Accessed on December 31, 2020)

[85] Omar Mahmood, "The Middle East's Complicated Engagement in the Horn of Africa", *US Institute of Peace*, January 28, 2020, available at: https://www.usip.org/publications/2020/01/middle-easts-complicated-engagement-horn-africa (Accessed on February 16, 2020)

[86] Alex de Waal, "Beyond the Red Sea: A new driving force in the politics of the Horn", *African Arguments*, July 11, 2018, available at: https://africanarguments.org/2018/07/beyond-red-sea-new-driving-force-politics-horn-africa/(Accessed on February 16, 2021)

[87] Zach Vertin, "Red Sea Rivalries: The Gulf, the Horn and the New Geopolitics of the Red Sea", *Brookings Institution*, June 2019, available at: https://www.brookings.edu/wp-content/uploads/2019/06/Red-Sea-Rivalries.-The-Gulf-The-Horn-and-the-New-Geopolitics-of-the-Red-Sea-English-pdf.pdf (Accessed on December 31, 2020)

[88] *The Economist*, "Qatar and Turkey: The Special relationship", January 23, 2021, available at: https://www.economist.com/middle-east-and-africa/2021/01/23/how-qatar-and-turkey-came-together(Accessed on February 16, 2021)

[89]*The Arab Weekly*, "Sudan accuses Qatar of 'conspiracy' against military council", May 25, 2020, available at: https://thearabweekly.com/sudan-accuses-qatar-conspiracy-against-military-council (Accessed on February 16, 2021)

[90] Neil Melvin, "The Foreign Military Presence in the Horn of Africa Region", *SIPRI Background Paper*, April 2019, available at: https://www.sipri.org/sites/default/files/2019-05/sipribp1904_2.pdf (Accessed on January 1, 2021)

[91] Ali Abo rezeg, "Israel-UAE spy base on Socotra targets Iran, China, Pakistan", *Anadolu Agency*, September 2, 2020, available at: https://www.aa.com.tr/en/middle-east/israel-uae-spy-base-on-socotra-targets-iran-china-pakistan-/1960475(Accessed on February 16, 2021)

[92] Neil Melvin, "The Foreign Military Presence in the Horn of Africa Region", *SIPRI Background Paper*, April 2019, available at: https://www.sipri.org/sites/default/files/2019-05/sipribp1904_2.pdf (Accessed on January 1, 2021)

[93]*NTS-Asia*, "About Non-Traditional Security", 2021, available at: https://rsis-ntsasia.org/about-nts-asia/ (Accessed on February 7, 2021)

[94]Ibid

[95]*Council on Foreign Relations (CFR)*, "Al-Shabab", 2021, available at: https://www.cfr.org/timeline/al-shabab (Accessed on February 7, 2021)

[96]Ibid

[97]*European Institute of Peace*, "The Islamic State in East Africa", September 2018, available at: https://www.eip.org/publication/report-islamic-state-in-east-africa/ (Accessed on February 7, 2021)

[98]Southern Africa Team, "Terrorism in Mozambique needs African Solutions", *Institute of Security Studies*, December 18, 2020, available at: https://issafrica.org/iss-today/terrorism-in-mozambique-needs-african-solutions(Accessed on February 7, 2021)

[99]Andrew Harding, "Mozambique's Islamist insurgency: UN warns of rising violence in Cabo Delgado", *BBC News*, December 18, 2021, available at: https://www.bbc.com/news/world-africa-55348896 (Accessed on February 7, 2021)

[100]Ibid

[101] W.B., "What is happening to Africa's pirates?", *The Economist*, January 16, 2018, available at: https://www.economist.com/the-economist-explains/2018/01/16/what-is-happening-to-africas-pirates(Accessed on February 7, 2021)

[102] Olivia Gippner, "Antipiracy and Unusual Coalitions in the Indian Ocean Region: China's Changing Role and Confidence Building with India", *Journal of Current Chinese Affairs*, 45(3), 2016, pp. 107-137.

[103] Neil Melvin, "The Foreign Military Presence in the Horn of Africa Region", *SIPRI Background Paper*, April 2019, available at: https://www.sipri.org/sites/default/files/2019-05/sipribp1904_2.pdf (Accessed on January 1, 2021)

[104] P K Ghosh, Chinese nuclear subs in the Indian Ocean", *The Diplomat*, April 12, 2015, available at: https://thediplomat.com/2015/04/chinese-nuclear-subs-in-the-indian-ocean/ (Accessed on February 7, 2021)

[105] Simone Haysom, Peter Gastrow and Mark Shaw, "The Heroin Coast: A political economy along the eastern African seaboard", *ENACT Research Paper*, June, 2018.

[106] Michael Horton, "Arms from Yemen will fuel the conflict in the Horn of Africa", *Terrorism Monitor*, 18(8), 2020, pp. 3-5.

[107] Simone Haysom, Peter Gastrow and Mark Shaw, "The Heroin Coast: A political economy along the eastern African seaboard", *ENACT Research Paper*, June, 2018.

[108]TawandaKarombo, "These African countries are among the world's worst hit by climate change", *Quartz Africa*, January 28, 2021, available at: https://qz.com/africa/1965013/mozambique-zimbabwe-malawi-worlds-worst-hit-by-climate-change/#:~:text=Five%20African%20countries%3A%20Mozambique%2C%20Zimbabwe,the%20new%20Global%20Climate%20Index (Accessed on February 7, 2021)

[109]*FAO*, "What is IUU Fishing?", 2021, available at: http://www.fao.org/iuu-fishing/background/what-is-iuu-fishing/en/ (Accessed on February 7, 2021)

[110]*FAO*, "FAO helping countries fight illegal fishing in Indian Ocean", June 21, 2007, available at: http://www.fao.org/newsroom/en/news/2007/1000608/index.html (Accessed on February 7, 2021)

[111]Obura, D. et al, "Reviving the Western Indian Ocean Economy: Actions for a Sustainable Future", *WWF International*, 2017, Gland, Switzerland, pp. 15

[112] Blake Herzinger, "China Is Fishing for Trouble at Sea", *Foreign Policy*, November 20, 2020, available at: https://foreignpolicy.com/2020/11/20/china-illegal-catch-fishing-biden-trump/(Accessed on February 7, 2021)

[113] *Indian Ocean Rim Association*, 2021, available at: https://www.iora.int/en(Accessed on February 8, 2021)

[114] *Indian Ocean Rim Association*, "Charter of the Indian Ocean Rim Association", November 2, 2018, available at: https://www.iora.int/media/8248/iora-charter-min.pdf (Accessed on February 8, 2021)

[115] Ibid

[116] *Indian Ocean Rim Association*, "Overview", 2021, available at: https://www.iora.int/en/structures-mechanisms/structures/overview(Accessed on February 8, 2021)

[117] *Indian Ocean Rim Association*, "Charter of the Indian Ocean Rim Association", November 2, 2018, available at: https://www.iora.int/media/8248/iora-charter-min.pdf (Accessed on February 8, 2021)

[118] Ibid

[119] *Indian Ocean Rim Association*, "Overview", 2021, available at: https://www.iora.int/en/structures-mechanisms/structures/overview (Accessed on February 8, 2021)

[120] Ibid

[121] *Indian Ocean Rim Association*, "Flagship Projects", 2021, available at: https://www.iora.int/en (Accessed on February 8, 2021)

[122] *Ministry of External Affairs*, "11th Delhi Dialogue; 6th Indian Ocean Dialogue and associated events (December 13-14, 2019)", December 10, 2019, available at: https://mea.gov.in/press-releases.htm?dtl/32180/11th+Delhi+Dialogue+6th+Indian+Ocean+Dialogue+and+associated+events+December+13 14+2019

[123] *Ministry of External Affairs*, "20th Meeting of Indian Ocean Rim Association Council of Ministers", December 17, 2020, available at: https://www.mea.gov.in/press-releases.htm?dtl/33312/20th+Meeting+of+Indian+Ocean+Rim+Association+Council+of+Ministers#:~:text=Muraleedharan%2C%20MoS%2C%20Ministry%20of%20External,States%20and%2010%20Dialogue%20Partners. (Accessed on February 8, 2021)

[124] Devirupa Mitra, "Faraway France Enters Indian Ocean Rim Association as India Backs Move, Iran Eases Off", *The Wire*, December 18, 2020, available at: https://thewire.in/external-affairs/indian-ocean-rim-association-iora-france-india-iran(Accessed on February 8, 2021)

[125] *Indian Navy*, "10th Anniversary of Indian Ocean Naval Symposium to be Hosted on 13-14 November 2018", November 5, 2018, available at: https://www.indiannavy.nic.in/content/10th-anniversary-indian-ocean-naval-symposium-be-hosted-13-14-november-2018(Accessed on February 8, 2021)

[126] Ibid

[127] Ibid

[128] Ibid

[129] Sam Bateman, "The Indian Ocean Naval Symposium – Will the Navies of the Indian Ocean Region unite?", *RSIS Commentary*, March 17, 2008, available at: https://www.rsis.edu.sg/rsis-publication/idss/1055-the-indian-ocean-naval-symposi/#.YCDY1-gzYdV(Accessed on February 8, 2020)

[130] *Royal Australian Navy*, "Indian Ocean Naval Symposium", 2021, available at: https://www.navy.gov.au/ions(Accessed on February 8, 2020)

[131]Ibid

[132]*Press Information Bureau*, "Raksha Mantri Shri Rajnath Singh speaks with French Minister of Armed Forces; Agree to strengthen bilateral defence cooperation between India and France", June 2, 2021, available at: https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1628615 (Accessed on February 8, 2021)

[133]*Indian Ocean Commission*, 2018, available at: https://www.commissionoceanindien.org/presentation-coi/, (Accessed on February 8, 2021)

[134] Christian Bouchard and William Crumplin, "Two faces of France: 'France of the Indian Ocean'/'France in the Indian Ocean'", *The Journal of the Indian Ocean Region*, 7(2), 2011, pp. 161-182

[135]The Wire Staff, "India Approved as Observer of Indian Ocean Commission", *The Wire*, March 6, 2020, available at: https://thewire.in/diplomacy/india-approved-as-observer-of-indian-ocean-commission (Accessed on February 8, 2021)